रागसङ्ग्रह

راگ سنگرہ

श्री विद्वच्छिरोमणि कवि कुल कल्प द्रुम श्री हरिश्चन्द्र कवि कृत

जिसमें

श्री भक्त जनाधार पर ब्रह्म ईश्वर रूप श्री कृष्ण चन्द्र और श्री दाशरथि रामचन्द्र महाराज और अनेक देवी देवताओं के रागसहित भजन भक्ति भाव अभिलाषियों के भजन स्मरण के निमित्त सुगमता पूर्व्वक वर्णित हैं

स्वच्छता पूर्व्वक शुद्ध होकर

पहिली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८२ ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	जातकालंकार स.	१ पहिले हिस्सा में	२ सभापर्व्व
लघुकौमुदी	जातकाभरण	आदिपर्व्व, सभापर्व्व,	३ बनपर्व्व
सिद्धान्त चन्द्रिका	होरामकरंद	बनपर्व्व,	४ विराट पर्व्व
अमरकोश तीनोंका स	संस्कृत उर्दू टी. स.	२ दूसरे हिस्सा में वि-	५ उद्योग पर्व्व
पंचमहायज्ञ	मनुस्मृति	राटपर्व्व, उद्योगपर्व्व,	६ भीष्म पर्व्व
निर्णयसिन्धु	विष्णुहारीत	भीष्मपर्व्व, द्रोणपर्व्व,	७ द्रोणपर्व्व
संग्रहशिरोमणि	महिम्नस्तोत्र	३ तीसरे हिस्सा में क-	८ कर्णपर्व्व
भगवद्गीता सटीक	संस्कृत भा. टी. स.	र्णपर्व्व, शल्यपर्व्व,	९ शल्यपर्व्व व गदा
दुर्गापाठ सटीक	अमरकोष	गदा पर्व्व, सौप्तिक प-	व सौप्तिकपर्व्व मये
विष्णुभागवत	याज्ञवल्क्यस्मृति	र्व्व, ऐषीक पर्व्व, वि-	ऐषीक व विशोक
भविष्योत्तर पुराण	संध्यापद्धति	शोक पर्व्व, स्त्रीपर्व्व,	व स्त्री पर्व्व
अपराधभञ्जनस्तोत्र	व्रतार्क	शांतिपर्व्व में राजधर्म्म	१० शांतिपर्व्व राज
दुर्गास्तोत्र	भगवद्गीता टी. हन्वं.	आपद्धर्म्म मोक्ष-	धर्म्म व आपद् धर्म्म
कायस्थकुल भास्कर	भगवद्गीता टी. आनि.	धर्म्म	व मोक्ष धर्म्म व दान धर्म्म
कायस्थ धर्मनिरूपण	गीतगोविंद		
	कथा सत्यनारायण	४ हिस्सा में शान्ति	११ अश्वमेध आ-
तथा छोटा	परमार्थसार	पर्व्व दान धर्म्म अ-	श्रमवासक मुशल
मथुरा सभा	शार्ङ्गधर संहिता	श्वमेध आश्रम वा-	पर्व्व महाप्रस्थान स्व
ज्योतिष	पाराशरी सटीक	सिक पर्व्व व मौसल	र्गारोहन
मुहूर्त गणपति	शीघ्रबोध सटीक	पर्व्व व यानप्रस्थान	१२ हरिवंश पर्व्व
मुहूर्त चक्रदीपिका	लघुजातक	स्वर्गारोहन पर्व्व	रमायण रामविलास
मुहूर्त चिन्तामणि स.	षट्पंचाशिका	हरिवंश पर्व्व	रामायण तुलसी कृत
मुहूर्त मार्त्तण्ड स.	सामुद्रिक	महाभारत पर्व्व अ-	रामायण सटीक मये
मुहूर्त दीपक	भाषा (इतिहास;	लहदा भी हैं	मानसदीपिका कोष
वृहज्जातक स.	महाभारत	१ आदिपर्व्व	आदि तथा जिल्द सी

सारँग ॥ आजु हरि विहरत यमुना तीर ॥ धृ० ॥ श्यामा संग रंग भरि सो-
हत पहिने झीने चीर ॥ १ ॥ प्रथम समागम सकुचत प्यारी जब प-
रसत बलबीर ॥ २ ॥ उघरत अंग भीनि जल बसनन लाजि भज-
त तव तीर ॥ ३ ॥ धीर समीर सोहायो लागत तै सोइ धीर समीर ॥ ४ ॥
हरीचन्द संगम गुन गावत छवि लखि धरत न धीर ॥ ५ ॥

दीपावली

ईमन ॥ आजु तरनि तनया निकट परम परसा प्रगट व्रज बधु-
नि मिलि रची दीप माला ॥ जोति जाल जग मग जगत हरि ।
थिर नहिं लगत छूट छबि की परत अति बिशाला ॥ खड़ी न-
वल बनिता बनी चार दिसि छवि सनी हंसहि गावहिं करहिं ।
विविध ख्याला ॥ निरखि सखी हरिचन्द अति चकित सी है
कहति जयति राधे जयति नंद लाल ॥ १ ॥
ई मन ॥ आजु ब्रज छबि की छूट परै ॥ ध्रु० ॥ इत नंद लाल ला-
डली इत इत दीपक जोति बरै ॥ १ ॥ इत सह चरी ललित ललि-
ता दिक मुरछल चँवर ढरै ॥ २ ॥ इत जरतार तास सारी इत भूषन
झलक भरै ॥ ३ ॥ इत नव खंड सीस महलायत दुगुनित बिंब ।

वारे ॥ ४ ॥ इतबादलन लपेटी झालर झला बोर झलरे ॥ ५ ॥ इत सारी को रनसो मुक्ता मानिक हीर झरे ॥ ६ ॥ यमुना जल प्रति बिंब सुहायो जल छबि मिलि हलरे ॥ ७ ॥ हरीचन्द मुखचन्द मिली। सबरबि ससि गरब हरे ॥ ८ ॥

प्रबोधिनी एकादशी

बिहाग ॥ आजु सुहाग की राति रसीली ॥ गावो नाचो करो बधाई कुंजनि मांझ छबीली ॥ ध्रु० ॥ गावत छोड़ी देव मनावत रस बरसत भर पूर ॥ हरीचन्द को टेरि टेरि के देत सखी सब भूर ॥ १ ॥

दीपा वली

कान्हरा ॥ आजु संकेतन दीपक वारे ॥ ध्रु० ॥ बिकट जानि गोबरधन घटियां अपने हाथ संवारे ॥ १ ॥ किये प्रकाशित गह्वर। गिरि थल कुंज पुंज ब्रज सारे ॥ २ ॥ हरीचन्द अपनी प्यारी की बाट निहारत प्यारे ॥ ३ ॥

नित्य बिहार

केदारा चौताला ॥ अरी हरि या मग निकसे आइ अचानक हौं तो झरोखे रही ठाढ़ी ॥ देखत रूप ठगोरी सी लागी बिरह बेलि। उर बाढ़ी ॥ गुरुजन के भय संग गई नहिं रहि गई मनहुं चित्र लिखि काढ़ी ॥ हरीचन्द बलि ऐसी लाज में लगोरी आग हौं बिरहादुख दाढ़ी ॥ १ ॥ अरी सखी गाज परौ ऐसी लोक लाज पै मदनमोहन संग जान न पाई ॥ हौं तो झरोखे ठाढ़ी देखती ही कछु आये इते में कन्हाई ॥ औचक दीठि परी मेरे तन हंस कछु बंसी बजाई ॥ हरीचन्द सोहि अति बिबस छोड़ि के प्रान लीने संग लाई ॥ २ ॥

झुमरी ॥ अठिलात संवरिया मदते भरो ॥ ध्रु० ॥ कटि काछनि सिर। मुकुट बिराजत कांधे पर सोहै पटुका लहरिया ॥ १ ॥ पहुंची बाजूबन माल अरु अंगुरिन २ सोहै मुंदरिया ॥ २ ॥ हरीचन्द मेरे मन।

बसो मोहू हरि राधा सीहै जाकी नागरिया ॥ ३ ॥

श्री चंद्रावलीजी कीबधाई

सारंग ॥ आजु ब्रज बाजत महा बधाई ॥ परम प्रेम निधि श्री चन्द्रावलि चंद्र भानु नृप जाई ॥ १ ॥ प्रफुल्लित भई कुंज द्रुमवेल्ली की-रादिक सुखपाई ॥ परम रसिक बर नन्दलाल हित प्रगट भूमि पै आई ॥ २ ॥ चंद्र भानु नृप दान देत बहु हय गय सकल लुटाई ॥ चंद्र कलारानी सुख दानी ताकी कूख सिराई ॥ ३ ॥ आये नन्दादिक सब मिलिके महाभान घर धाई ॥ प्रगटी सखी स्वामिनी कीब्रज सब मिलि नाचत गाई ॥ ४ ॥ चंपक लता बहुरि चन्द्रावलि तनया युगुल सुहाई ॥ प्रगटे ब्रज सुत हू ते दूनो करत उछाव बनाई ॥ ५ ॥ गुप्त रूप कोउ लखत नहीं कछु भेद न जान्यो जाई ॥ हरी चन्द श्री बिठ्ठल पद लखि लख्यो भेद सुख दाई ॥ ६ ॥

श्री बल्देव जी कीबधाई

सारंग ॥ आज ब्रज दूनो बढ़यो अनंद ॥ भादों सुदी पंचमी स्वाती बुध प्रगटे यदुचन्द ॥ अग्रज श्री गिरि धारन जूके लीला ललित अमंद ॥ रोहिनि माता उदर प्रगट भये हरन भक्त के दंद ॥ दान देत हरषे नन्द यसुमति हय गय रतनन कंद ॥ हरीचन्द बलि आनंद फूले गावत देव मुकुंद ॥

गोवरधन पूजा

बिलावल ॥ आजु बन उमंग फिरत अहीर ॥ हेरी देत बदत नहिं काहू देखियत जित तित भीर ॥ इक गावत इक ताल बजावत एक बनावत चीर । इक नाचत इक गाइ खिलावत एक उड़ावत छीर ॥ हमरो देव गुवर धन परवत सुन्दर श्याम शरीर । कहा करैगो इन्द्र बापुरो जावस केवल नीर ॥ सात दिवस गिरि कर धरि राख्यो वाम भुजाबल बीर ॥ हरीचन्द जीत्यो मो मोहनहार्यो इंद्र अधीर ॥ १ ॥

नित्य बिहार

बिहार ॥ आजु चलि कुंजन देखहु छाई बिमल जुन्हाई ॥ पंच रंग्रते खिरि खिरि आवत तातर सेज बिछाई ॥ समय निशीथ दूकान भयो अति कहुं कहुं खग बोलत सुख पाई । ललिता दूर बजावत बीना मधुर मृदंगहु परत सुनाई ॥ आलिंगन परिरंभन को सुख लूटत तहां युगुल रस दाई ॥ हरीचन्द वारत तन मन सब गावत केलि बधाई ॥

श्री महा प्रभु जी की बधाई

सारंग ॥ आजु भयो सांचो मङ्गल भुव प्रगटे श्री वल्लभ सुख धाम । करुना सिंधु सकल रस पोषक पतित उधारन जाको नाम ॥ दैवी जीवन अभय दान दे रसिक जनन के पूरे काम ॥ हरीचन्द प्रभु मंगल मूरति गोर श्याम बपु सकल ललाम ॥

श्री ठाकुर जी की बधाई

आसावरी ॥ आनंद सागर आजु उमड़ि चल्यो ॥ व्रज में प्रगटे आइ कन्हाई ॥ नाचत ग्वाल करत कौतूहल हेरी देत कहि नन्द दुहाई । छिरकत गोपी गोप सबै मिलि गावत मंगलचार बधाई ॥ आनंद भरे देत कर तारी लखि सुर गन कुसु मन भरलाई ॥ देत दान सन मान नंद जू अति हुलास कछु बरनि न जाई ॥ हरीचन्द जन जानि आपु नो टेरि देत सब बहुत बधाई ।१॥

ग्रीष्म ऋतु

सारंग ॥ एरी फुहारन के दोउ कौतुक में उर भाने । धरत फूल फल नीर धार पर देखत रहत लुभाने ॥ कबहुंक चकई चलत चपल अध अरध बहु गति ठाने ॥ हरीचन्द रिझवत सब सखि मिलि नव जल केलि बहाने ॥ १ युगुल दोउ बैठे हो शीतल छांह । सखी खड़ीं चारो ओर । फूली मन माह—राम-

तिन बिच प्यारी-पियादिये गल बाँह ॥ २ ॥

बिहार

बिहाग ॥ आजु दोउ बिरहत कुंजर कन्त ॥ श्यामा श्याम सम रंग चाटे मुख को लहत न अन्त ॥ ज्यों ज्यों निसि भीनत रंग बाढ़त होन सुरत की कन्त । हारत कोउ न अभिरे दोउ मदन समर सामन्त ॥ तहाँ न जाइ सकत सखि गनहू जहाँ कामिनी कंत । हरीचन्द श्री वल्लभपद बल ताहि अनुभवत मन्त ॥

श्री नृसिंह चतुरदशी की बधाई

सारंग ॥ आजु अपमान अतिही निरखि भक्त को बैकुंठ बन सिंह बहुत को थो ॥ पटकि कर भूमि पै झटकि सिर केसरद चाभि ओठन तेज गगन लो थो ॥ खंभ को फारि चिक्कारि केहरि नाद गर्भिनी गर्भ गर जल गिरायो । सटा फटकारि के नक्षत्र गन नभहि फेंकि इत सो उतहि क्रोध छायो । कोटि मनु बिज्जु इक साथ ही गिरि परी भयो अति घोर भुव सोर भारी । सिंधु जल उच्छल्यो गिरे पव्वत शिखर बृक्ष जड़ सों सबै दिये उजारी । देव दानव मनुज गिरे भय भाजि कै फूटि गए कान मुंधित न कछु नाहीं । आज अस मय प्रलय देखि शिव चौंकि कै सूल धरि भ्रमत इत उत लखाहीं । सृष्टि को क्रम भंग जानि विधि बावरो मूड़ पै हाथ धरि बहुत रोयो । दिसा दहि वे लगीं भयो उल्कापात रुदित मूरति तेज अगिन खोयो । त्रस्त मधुकर पिवत नाहिं मधु वृंद को गऊ निज वत्स गन नाहिं चाटें । हवि अगिन नहिं हरत उरत तहँ पौन नहिं गौन करि सकत तन भधूर पाटें ॥ चकित माया नटी भूलि निज नटक ला जगत गति जीव जड़ रोकि लीनी । सबै शृंगार निज करत ही रहि गई मनो सब चातुरी हारि दीनी । जगत जाको खेल बनत बिगड़त तनिक भौंह के इत सों उत हलन माहीं । सोई अै लो

कश्यप पति आजु को पौज बैत वे अब सबै कहें सरन नाही। मार हर-
नाक्ष उर फार कर नखन सों मार हर भूमि अति शाक टारयो॥ गो-
द प्रहलाद अह लाद पूरव लियो चाट मुख चूमि जलन नयन ढा-
स्यो॥ राज दय अभय पद आप पदमा सहित गए बैकुंठ जय-
जगत छायो॥ प्रेम परधान परमान प्रेमीन उर भक्त बत्सल नाम
साँच पायो॥ सदा संकट हरन अकर कारन करन कृपा कर नाम
जिय जौन धारै॥ शत्रु संताप यम जातना ताप हर अचल वर धा-
म निज सो बिहारै॥ सदा प्रभु सर्वदा गर्भ हर अभय कर जन न-
डर सोरक कर दुख हारी॥ पीर हरिचन्द की हरहु करुणायत-
न चसित कलि काल नव शरण धारी॥२॥

बसन्त पंचमी

राग बसन्त॥ आई हैं आज बसन्त पंचमी पियहि बसन्त ब-
धाओ॥ भरो रंगीलि प्रान नाथ को काम बधाई गाओ॥१॥ क-
नक कलस भरि केसर चरि चित आम मंजरी धारो। बिबिध-
कुसुम रचि माल अनेकन अपने हाथ सँवारो॥२॥ गावत च-
लो नन्द पौरी मिलि मन अभिलाष बढ़ाये॥ छिर को प्रान
नाथ चहुं दिशि सो करहु सबहि मन भाये॥३॥ भरहु अंक
भुज बांधि पिया को मुख चूमहु पर लाई। छांड़ि संक गुरु लो-
गन की अब लेहु ने साध पुजाई॥४॥ कहं हरि कहं ब्रज क-
हं यह औसर कहं यह तान फिरपैहो। समय चूकि पछिता-
ये का पुनि देखत ही रहि जैहो॥५॥ उठो मिलो चलि पीतम
सों अब करो सबै मन भाए। पुरवो सकल मनोरथ जिय के ह-
रीचन्द गर लाए॥६॥

हिंडोरा

चौताला॥ श्याम घटा मधि स्यामहिं डोरो बन्यो श्यामास्याम झू-
लें जामैं अति ही अनन्द सों॥ तैसोई तमाल कुंज श्याम रंग ८

सोहत गोपी सब मिलि गावैं अनन्द के दंद सो ॥ १ ॥ अलिपिक मोर नील कंठ श्याम रंग सोहै श्यामाश्री यमुन बहै गति अति मंद सो ॥ हरीचन्द हरि को निरखि छवि महादेव श्याम गज खाल ओढ़ि नाचैं गावैं छन्द सो ॥ १ ॥

बिरह

ठुमरी ॥ अकुलात गुजरिया दुख ते भरी ॥ ध्रु० ॥ तन की सुधि तन की नहिं जब ते लागी हरि की तिरछी नजरिया ॥ १ ॥ तलफत रहत बिरह दुख भारी देत कोउ नहिं पिय की खबरिया ॥ २ ॥ हरीचन्द पिय बिन अति ब्याकुल रोवत सूनी देख सिजरिया ॥ ३ ॥

धमार

सिंदूरा ॥ श्री डफ धुंकार सुनि घर न रहोंगी मिलोंगी मीत को धाय ॥ ध्रु० ॥ फागुन लहि उमगेयो जो मदन जिय सो अब रोकि न जाय ॥ १ ॥ प्यारा नाथ आवन सुनि फिर भग घर में क्यौं ठहराय ॥ २ ॥ हरीचन्द गर लगोंगी पिया के जाने जगत बलाय ॥ ३ ॥

छाक के पद

मलार ॥ आगत नागर नन्द किशोर ॥ ध्रु० ॥ चहुं दिशि तेज घटा जुरि आई बोलत दादुर मोर ॥ १ ॥ नान्हीं बूंदन बरसन लागी पवन चलत झकझोर ॥ २ ॥ चतुर्भुज प्रभु पात्र ले भाजे सघन कुंज की ओर ॥ ३ ॥

बिहार

बिहाग ॥ आजु रस कुंज महल में बतियन रैन सिरानी जात ॥ ध्रु ॥ जाल रंध्र तें भरित चांदनी चलत मंद कछु सी तल बात ॥ सन सनात निसि झिल्लि मिल दीपक पात खरक बिच बीच सुनात । रगमगे दोऊ भुज दिये सिरान्हे आलस बस मुसकात जंभात ॥ मधुर बिहारा सुनात दूरसों लपटि रहे विथकित सब गात ॥ हरीचन्द दोउ रूप लालची शिथिल तऊ जागे न अघात ॥ १ ॥

नित्य यथारुचि

आजु तनु नीलाम्बर अति सोहे ॥ ध्रु० ॥ तैसहि केश खुले मुख ऊपर देखत ही मन मोहे ॥ मनुत मगन लियो जीति चंद्रमा सो तिन मध्य बंध्यो है ॥ कै कवि निज जजमान जूथमें सुंदर आइ बस्यो है ॥ श्री यमुना जल कमल खिल्यो कोउ लखि मन अति लल च्यो है जानि तमो गुन को ताके सिर मनु सतोगुन निव सोहे ॥ सघन तमाल कुंजमें मनु कोउ कुन्द फूल प्रगस्यो है ॥ हरीचन्द मोहन मोहन छवि बरने सो कवि को है ॥ १ ॥

मल्लार चौताला

हिंडोर ॥ आजु ब्रज बधू फूली फूंलन के साज सजि प्यारी को झुलावत फूल के हिंडोरे । फूली ब्रज भूमि सब द्रुमलता रहे फूलि तैसोई पवन बहे फूल के झकोरें । फूली सखी एक आई साँवरे सलोने गात फूली प्यारी कराठ लगी प्रेम के हलोरें ॥ हरीचन्द बलि हारी फूलि फूलि जात वारी संगम गुन गावत सुरथोरे ॥ १ ॥

विहार यथारुचि

आजु मैं देखेरी आलीरी दोऊ मिलि पौढ़े ऊँची अँटारी । मुखसों मुख मिलाई बीरी खात रंग भरि नवल पिया प्रान प्यारी । चाँदनी प्रकास चारु ओर छिरकाव भयो सीतल चहुं दिसि चलत बयारी ॥ हरीचन्द सखी गन करत बींजना जानि सुरत श्रमभारी ॥ १ ॥

ग्रीष्म ऋतु फूल के सिंगार को पद

राग यथारुचि ॥ आज सखी फूले हरि फूल कुंज माहीं । प्यारी को संग लिये दीन्हे गल बाहीं ॥ १ ॥ फूलन के अङ्गन सब आभिरन अति सोहैं ॥ देखि देखि ब्रजजन के मन को अति मोहैं ॥ २ ॥ बिछिया पग गई बेलि चित की गति हरती । पंकज की पायजेब पाय जेब करती ॥ ३ ॥ मदन बान फूलन की कटि किंकिनी राजे ॥ कलि यन की चोली मधि जोबन

अति भ्राजै ॥ ४॥ चंपक की कली बनी चंपकली भारी ॥ फूलन के हार कंठ सोहन रुचि कारी ॥ ५॥ भुविया कर फूलन के बाजूबंद दोऊ ॥ फूलन की पहुंची कर राजत अतिसोऊ ॥ ६॥ फूलन की चूरी इमि दोउ कर साजै ॥ चंदन के डार मनहु लपटि लता राजै ॥ ७॥ पल्लवसी अंगुरिन में मुंदरी छवि देहीं। देखत ही सोहन मन हाथन सौं लेहीं ॥ ८॥ कारना के करन फूल करन बीच धारे। झुमका दोउ झूमत लखि मानो मत वारे ॥ ९॥ फूलन की भुलनी नक बेसर बिच धारी। प्यारे को चित्त मनो पोहि धस्यो प्यारी ॥ १०॥ मदन बान फूलन की बन्दी अनुरागे। देखत ही लालन हिय मदन बान लागे ॥ ११॥ बेना सिर फूलहि को देखत मन भूल्यो। रूप की ललामें मनो एक फूल फूल्यो ॥ १२॥ बेनी सिर फूलन की सोहत छवि छाई ॥ आप ने करि नन्द लाल गूंथि के बनाई ॥ १३॥ नख सिखलै फूलन के आभरनमय धारी। फूलन के लहँगा अरु फूलन की सारी ॥ १४॥ फूली छवि देखि देखि नन्द लाल फूल्यो। भ्रमर होइ मेरो मन हरीचन्द भूल्यो ॥ १५॥

यथा यथा

आजु सखी ब्रज राज लाड़िलो नव दूलह बनि आयो। फूल सेहरो शीश बिराजै फूलनि साज सजायो ॥ १॥ फूलनि के आभरन बिराजत फूलनि माल बनाई। फूलन चंवर दुरत दोऊ दिशि फूल छत्र सुखदाई ॥ २॥ घोड़ी सजी फूल के गहिने फूल लगाम बनाई। फूले फूले सकल बराती तन धन देत लुटाई ॥ ३॥ फूले देव बिमानन भूले फूलनि की झरि लाई। हरीचंद ऐसी जोरी पै फूलि फूलि बलि जाई ॥ ४॥

ग्रीष्म

सारंग ॥ आजु नन्दलाल पिय कुंज ठाढ़े भए अवत सुभ ग्रीष्म पै कल्पित कुसुमावली। मनहुं निज नाथ सखि देखि के खसित आकाश-

ते तरल तारावली। बहत सौरभ मिलित सुभगत्रयविधि पवन गुंजरत महारस मत्त मधुपावली। दास हरिचन्द ब्रजचन्द ठाढ़े मध्यगधिका बाम दक्षिण सुचन्द्रावली॥१॥

मकर संक्राति

यथा॥ अहो हरि नीको मकर मनाए॥ चित्र चमन धरि भलें लाड़िले पुण्य समय घर आये। कहा परव कियो दियो दान रस तिल तन प्रगट लखाए॥ हरीचन्द खिचरी से मिलि क्यौं कित तिरवेनी न्हाए॥१॥

श्री महाप्रभुजी की बधाई

सारँग॥ आजु भयो साँचो मंगल भुव प्रघटे श्री वल्लभ सुख धाम। करुणा सिंधु सकल रस पोषक पतित उधारन जाको नाम। दैवी जीवन अभय दान दै रसिक जनन के पूरे काम। हरीचन्द प्रभु मंगल मूरति गोर श्याम तन एक ललाम॥१॥

दीपावली

यथारुचि॥ आजु तरनि तनया निकट परम परम प्रगट ब्रज बधुन मिलि सरस दीप माला। जोति जाल जग मगत दृष्टि थिर नहिं लगत छूट छबि की परति अति बिशाला। खड़ी नतन बनिता वनी चारु दिशि छवि सनी हंसहिं गिरधर करहिं विविधि ख्याला। निरखि हरीचन्द अति चकित सी ह्वै कहति जयति राधे जयति नन्दलाला॥१॥२ आजु ब्रज छवि की छूट परै। इत नन्दलाल लाड़िली इत इत दीपक जोति बरै॥ इत सह सरी ललित ललिता दिक मुरछल चँवर दरै॥ इत जर तार तास वागी इत भूषण झलक भरै। इत नव खगड श्रीश महला इत दुगुनित बिंब परै। इत बादलन लपेटी झालर झला बोर झलरै। इत सारी कोरन सौं मुकुता मानिक हीर भरै। यमुना जल प्रति बिंब सुहायो जल छबि मिलि हलरैं। हरीचन्द मुख चन्द मिली सब रवि शशि गरव हरै॥२॥

तथा ॥ आजु संकेतन दीपक बारे। निकट जानि गोबरधनघटियां अपने हाथ सवांरे। किये प्रकाशित गहवर गिरिथल कुंज पुंज ब्रज सारे। हरीचन्द अपनी प्यारी की बाट निहारत प्यारे ॥१॥

तथा ॥ अरी तूं हठि चलि प्यारी दीप मराडल तें क्यों सोभा हरि लेत। तेरे मुख प्रकाश दीपक गन मन्द दिखाई देत। मंद परे आभा सब मेटी भिल मिलि भीने सेत। हरीचन्द तू दूरी बैठि कै कर त्यो हार सहेत ॥२॥

प्रबोधिनी

बिहाग ॥ आजु सुहाग की राति रसीली। गावो नाचो करो बधाई कुंजन मांझ छबीली। गावत घोड़ी देव मनावत रस बरषत भरपूर। हरीचन्द को टेरि टेरिकै देत सखी सब भूर ॥१॥

श्री स्वामिनीजी की बधाई

यथा रुचि ॥ आज ब्रज होत कुलाहल भारी। बरसाने वृषभान। गोप के श्री राधा अवतारी। गावत गोपी रस में ओपी गोप बजावत तारी। आनंद मगन गिनत नहिं काहू देत दिवावत गारी। देत दान सनमान भान जू कनक माल मनि सारी। जोजो जांचत तासों बढ़ पावत हरीचन्द बलि हारी ॥१॥

तथा ॥ आजु वल ग्वाल कोऊ नहिं जाई ॥ कहत पुकारि सुनो रे भैया कीरति कन्या जाई। लावहु गाय सिंगारि बच्छ सह सुवरन सींग मढ़ाई ॥ मोर पंख मखतूल झूल धरि अंग अंग चित्र कराई। आजु उदय सांचो सब ब्रज को गावहु गीत बधाई ॥ हरीचंद्र वृषभान बबा सौं बहुत निछावरि पाई ॥१॥

तथा ॥ आनन्दे मुख हेरि हेरि। ब्रज जन गावत देत बधाए नचत पिछौरी फेरि फेरि। उनमद गिनत न ग्वाल कछू ब्रज सुन्दरि राखी घेरि घेरि ॥ हेरी देदे बोलत सबहीं ऊंचे सुरसों टेरि टेरि। छिरकंत हंसत हंसावत धावत रारवत दधि घृत भेरि भेरि। हरीचन्द ऐसो सुख ।५

निरखत तन मन वारत बेरि बेरि ॥ १॥

तथा ॥ आनंद आजु भयो बरसाने जनमी राधा प्यारी जू। त्रिभुवन सुख दानी ठकुरानी जननी जनक दुलारी जू ॥ सुर नर मुनि जेहि ध्यान धरत हैं गावत वेद पुकारी जू। सो हरिचन्द बसत बरसाने मोहन प्रान अधारी जू ॥ १॥

तथा बिलावल ॥ आजु भौन वृषभान के प्रगटी श्री राधा। दूरि भई है री सखी त्रिभुवन की बाधा। को कवि जो छबि कहि सकै कछु कहि नहिं आवै। आनन्द अति परगट भयो दुख दूरि बहावै। डारहिं सब ब्रज गोपिका तन मन धन वारी। हरीचन्द श्री राधिका पद पै बलिहारी ॥ १॥

तथा

भैरौं ॥ आजु तो आनन्द भयो कापै कहि जावै। फूलैं सब गोपि ग्वाल इत उत बहु डोलैं। बाढ्यो अति हिय हुलास जैजै सुख बोलैं ॥ पहिरि पहिरि सुरंग सारी आईं ब्रज नारी। गावैं हिय मोद भरी दैदै कर तारी ॥ दान देत भानु राय जाको जो भावैं। हरिचन्द आनन्द भरि राधा गुन गावैं ॥ १॥

तथा कान्हरा ॥ आई भादों की उजियारी ॥ आनन्द भयो सकल ब्रज मंडल प्रगटी श्री व्रषभान दुलारी। कीरति जू की कोष सिरानी जाके घर प्यारी अवतारी। हरीचन्द मोहन जू की जोरी बिधना कुँवरि सँवारी ॥ १॥

तथा ॥ आजु बरसाने नौबत बाजैं ॥ बीन मृदंग ढोल सहनाई गह गहे दुंदुभि गाजें। सब ब्रज मराडल शोभा बाढ़ी घर घर सब सुख साजैं। हरीचन्द राधा के प्रगटे देव बधू सब लाजैं ॥ १॥

तथा ॥ आजु ब्रज आनँद बरसि रह्यो। प्रगट भई त्रिभुवन की शोभा सुख नहिं जात कह्यो। आनंद मगन नहीं सुधि तन की सब दुख दूरि बह्यो ॥ हरीचन्द आनन्दित तेहि छन चरण कि शरण गह्यो ॥ १॥

तथा ॥ आजु कहा नभ भीर भई ॥ सजनी कौन फूल बरसावे सुख की बेलि बई। बालक से चारहु को आये तीन नैन को को है। आदि बघम्बर सरप लपेटे जटा धरे सिर सोहे। तीनि चारि अरु पाँच सात षट मुख के मिलि क्यौं नाचैं। बड़ी जटा सुख तेज अनूपम को यह वेदहि बाँचें। बीन बजावति कौन लुगाई हंस चढ़ी क्यों डोले। को यह यंत्र बजाय रही है जै जै जै बोले। को यह लिये तमूरा ठाढ़ी को नाचे को गावे ॥ इत आवे कोउ बातन पूछत पुनि नभ लौं चलि जावे ॥ अति आचिरज भईं सब तन में बात करैं ब्रज नारी ॥ प्रगट भई वृषभानु गइ घर मोहन प्रान पियारी। आनँद बढ़्यो कहत नहिं आवे कवि की मति सकुचाई ॥ राधा श्याम चरण पंकज रज हरीचन्द बलि जाई ॥ १ ॥

तथा ॥ आजु प्रकट भई श्री राधा आजु प्रगट भई। गोपिका मिलि बरवन सों भानु नगर गई ॥ आइ नन्द जसोमति मिलि होत अधिक अनंद। भानु बरसाने उदय भो प्रगट पूरन चन्द। होत जय जय कार उहि पुर देव बरषैं फूल ॥ हरीचन्द सब गोपिका के मिटे उर के सूल ॥ १ ॥

तथा सारंग ॥ आजु दधि कांदो है बरसाने ॥ छिरकति गोपी गोप सबै मिलि काहू को नहिं माने। आनन्दित घर की सुधि भूली हम को हैं नहिं जाने। दधि घृत दूध उड़े लै सिर सों फिरहिं अतिहि सरसाने। वह आनन्द कापै कहि आवे भयो जौन महराने। श्री वल्लभ पद पद्म कृपा सों हरीचन्द कछु जाने ॥ १ ॥

तथा ॥ आए ब्रज जन धाय धाय। नाचत करत कोलाहल सब मिलि तारी दै दै गाय गाय। जुरे आइ सिगरे ब्रज वासी टीको बहु विधि लाय लाय। हरीचन्द आनन्द अति बाढ़्यो कहत नन्द सों जाय जाय ॥ १ ॥

तथा ॥ आजु भयो अति आनँद भारी। प्रगटी श्री वृषभान दुलारी। गोपी सब टीको लै आवें। मिलि मिलि रहसि बधाई गावें ॥ नाचत गोप देत सब तारी। तन मन की कछु सुधि न सम्हारी। दान देति हैं ॥

मनि गन हीरा। हेम परम्वर पीअर चीरा। सुख बाढ़यो तेहि छन अति-भारी॥ हरीचन्द छबि लखि बलिहारी॥२॥

श्री गोपीनाथ जी की बधाई

सारंग॥ आजु श्री बल्लभ के आनन्द। प्रगट भये ब्रज जन सुख दाई पूरन परमानन्द। गावत गीत सबै ब्रज बनिता सोहत हैं मुखचन्द। वेद पढ़त द्विज बर बहु ठाढ़े देत असीस सुछन्द। गुप्त रूप कोउ प्रगट न जानत हलधर सब सुखकन्द। गोपी नाथ अनाथ नाथ लखि मन बारत हरिचन्द॥१॥

श्री ठाकुर जी की बधाई।

बिहाग॥ आयो समय महा सुख कारी। सब गुन गन संयुत मन रंजित अति शय परम सुशोभा धारी। रोहिनि नषत सात शुभ ग्रह सब कहा कहिये उपमा मति हारी॥ दिसा प्रसन्न हंसत नभ निरमल तारन की बाढ़ी छबि भारी। मंगल मय धरनी सब राजत पुर आकर ब्रज गाँव सुखारी। नदी प्रसन्न सलिल तालन की कमलन सों भइ शोभा भारी। द्विज अलि कुल सन्नाद करन लागे बन राजी फूलनि फुलवारी। पुराय गंध लै बह्यो महा शुभ वायु सविधि सुचि त्रिविधि बयारी। दुज जाँचन की शांत अगिन सब प्रगट भई कुराडन तें नारी। असुर द्रोह सब साधूजन के मन सु प्रसन्न भए ता वारी। अज्ञ नजनम को समय जानि कै बजति लजति सब दुंदुभि सारी। गाइ उठे गन्धर्व रु किन्नर चारन साधु तुष्टि मन धारी। नाँचन लगी देव अपसरा सह अति प्यारी सब घर की नारी। मुनि देवता महा आनन्दित बरसत फूल नभ भरि भरि थारी। सागर के गरजन के पीछे मंद मन्द गरजे जल धारी। आधी राति उदित भयो चन्दा आनंद करत हरत अँधियारी। देवि रूपिनी देवी जूतें प्रगट भए श्री गिरिवर धारी। निरखि नैन आनन्द सिथिल भे हरीचन्द बलि हारी॥१॥

बाल लीला

आसावरी॥ आजु लख्यो आगन में खेलत जसुदा जू को बारो री॥ पीत झंगुलिया तनक चौतनी मन हरि लेत दुलारो री। अति सुकुमारि चन्द से मुख पै तनक डिठौना दीनो री। मानहु श्याम कमल पै इक अलि बैठो है रंग भीनो री। उर बघनहा बिराजत सखि री। उपमा नहिं कहि आवे री। मनु फूली अगस्त की कलिका शोभा। अतिहि बढ़ावे री। छोटी छोटी सीस लटुरिया अलकावलि जनु आई री। तैसी तनक कुल्हइया तापे देखत अति सुखदाई री। क्षुद्र घंटिका कटि में सोहत शोभा परम रसालारी। मनहु भवन सुन्दरता को लखि बाँधी बन्दन मालारी। पीत झंगा अति तन पै राजत उपमा यह बनि आई री। मनु घन में दामिनि लपटानी छवि कछु बरनिन जाई री। कोटि काम अभिराम रूप लखि अपनो तन मन वारे री। हरीचन्द ब्रज चन्द चरन रज लेत बलैया हारे री॥१॥

बधाई

सारंग॥ आनंद सागर आज उमड़ि चल्यो प्रगटे ब्रज में आइ कन्हाई। नाचत ग्वाल करत कौतूहल हेरी देत कहि नन्द दुहाई। छिरकत गोपी गोप सबै मिलि गावत मंगल चार बधाई। आनन्द भरे देत कर तारी लखि सुरगन कुसुमनि झरि लाई। दान देत सनमानि नन्द जू अति हुलास कछु बरनिन जाई। हरीचन्द जन जानि आपनो टेरि देत सब बहुत बधाई॥१॥

तथा॥ आजु ब्रज होत कोलाहल भारी॥ नन्द राय घर मोहन प्रगटे भक्तन के सुखकारी। जित तित ते धाई टीको ले अति आकुल ब्रजनारी। निरखन कारन श्याम नवल ससि उमगीं सजि सारी। गावत। गोप चोप भरि नाचत दै दै के कर तारी। बाजे बजत उड़त दधि माखन। छीर मनहु धन धारी। दान देत नन्द राय उमंगि रस रतन धेनु बिसारी।

हरी चन्द सो निरखि परम सुख देत अपन पो वारी ॥ २ ॥ ॥ १ ॥

दान लीला

टोड़ी॥ ऐसी नहिं कीजे लाल देखत सब ब्रज की बाल काहे हरि गये आज बहुतहि इतराई ॥ सूधे क्यौंन दान लेउ अंचरा मेरो छांडि देव जामें मेरी लाज रहै करो सो उपाई। जानत ब्रज प्रीति सबै औरहू हसैंगे अबै गोकुल के लोग होत बड़ेई चवाई। हरीचन्द गुप्त प्रीति बरसत अति रस की रीति नेकहू जो जाने कोउ प्रगटत रस जाई ॥ १॥

नित्य

यथा रुचि॥ आजु महा मंगल भयो भोर। प्रान नाथ भेटे मारगमें चितयो प्रेम भरी दृग कोर। करौं निछावरि प्राण जीवन धन तनकहि निरखत भौंह मरोर। श्यामस्वरूप सुधारस सानी बानी बोलत नन्द किशोर। कोटि काम लावण्य मनोहर माखन मन तन धन को चोर। नेह भयो सब अंग सलोनो आनँद रस भीनो प्रति पोर॥ सिद्धि होयगो सिगरो कारज प्रातहि मिल्यो प्रान पिय मोर। हरीचन्द युग युग चिरजीवो मांगत ग्वलिनि आँचर छोर ॥ २॥

श्री स्वामिनीजी की बधाई

परज॥ एरी आज बाजे छे रंग बधावना। कीरति उदर उदय शिरि प्रगट्यो अद्भुत चन्द सोहावना। आजु सुफल भयो नन्द महोत्सव नर नारी मिलि गावना। हरीचन्द वृषभानु बबा सौं प्रेम बधायी पावना ॥ १॥

हिंडोरा

परज॥ एरी आज झूले छे स्याम हिंडोरैं। वृन्दावनरी सघन कुंज मैं यमुना जी लेतो हलोरैं। संग प्यारे वृषभाननन्दिनी सोहे छे रंग गोरे। हरीचन्द जीवन धन वारी मुख लखती चित चोरै ॥ १॥

रथयात्रा

सारंग॥ कुंज कुंज रथ डोलै मदन मोहन जू को सेत धुजा तामें

उड़ि उड़ि सोहे। तैसोई सघन घन छाय रह्यो नभ बीच। देखत ही मन मथ मन मोहे। दौरत मैं कर हरत पीताम्बर मनु दामिनि घन नाचे। सेत धुजा बग पाँति छवि कछु कहिनि जात निरखत अति मन आनन्द सचे। द्रुम द्रुम कुंज कुंज बन बन तीर नीर घूमत रथ फिरि आवे। हरीचन्द बलि जाय छवि देखि सुख पाय तन मन धन सब वारि के लुटावे ॥२॥

मकर संक्रान्ति

टोडी ॥ करत दोउ मिहि हित खिचरी दान। जामें सदा मिले रहैं ऐसेहि गौर श्याम सुख खान। चित्र वस्त्र धरि परम नेह सों जोरि पान सों पानं सों पान ॥ ।हरीचन्द त्यौहार मनावत सखिजन वारत प्रान ॥१॥

दीनता

यथा रुचि ॥ कहु रे श्री वल्लभ राज कुमार। दीन उधारन आरत नासन प्रगट कृष्ण अवतार। काहे भरमायो डोलत मनसा धन करत हजार। यह भव रुज क्यौं हू नहिं जैहैं बिना चरन उपचार। कौन पतित सो नेम निबहि है जो बहु अघ आगार। श्रुति पुराण कछु काम न ऐहैं यह तोहि कहत पुकार। बुरे दिनन को साथी कोउ नहिं मान पिता परिवार। हरीचन्द तासों विट्ठल भजु यहै अहै श्रुति सार॥१॥

तथा ॥ करनी करुणासिंधु की कापै कहि जाई। अति उदार गुण गन भरे गोवरधन राई। तनिक तुलसि दल के दिये तेहि बहु करि मानैं। सेवा लघु निज दास की पर बत सी जानैं। अजा मेल सुत आपनो तुव नाम पुकारयो। ताको अघ सब दूरि कै तुम तुरत उबारयो। कहा व्याध गजराज सों करनी बनि आई। कहा गीध गणिका कियो तारयो तुम धाई। कहा कपिन को रूप है का गुण बड़ि आई। तिन सों बोले बंधु से ऐसी करुणाई। कहा कपिन को रूप है कहँ त्रिभुवन स्वामी। ताकी अग्र भुज सारखी किये चरण गुलामी।

हरीचन्द सो निरखि परम सुख देत अपनपो वारी ॥ २ ॥ ॥ १ ॥

दानलीला

टोड़ी॥ ऐसी नहिं कीजे लाल देखत सब ब्रज की बाल काहे हरि। गये आज बहुतहि इतराई ॥ सूधे क्यों न दान लेउ अंचरा मेरो छांडि देव जामें मेरी लाज रहे करो सो उपाई। जानत ब्रज प्रीति सबै। औरहू हसैंगे अबै गोकुल के लोग होत बड़ेई चवाई। हरीचन्द। गुप्त प्रीति बरसत अति रस की रीति नेकहू जो जाने कोउ प्रगटत रस जाई ॥ १॥

नित्य

यथारुचि॥ आजु महा मंगल भयो भोर। प्रान नाथ भेटे मारगमें चितयो प्रेम भरी दृग कोर। करौं निछावरि प्राण जीवन धन तनकहि निरखत भौंह मरोर। श्यामस्वरूप सुधारस सानी बानी बोलत नन्द किशोर। कोटि काम लावण्य मनोहर माखन मन तन धन को चोर। नेह भयो सब अंग सलोनो आनंद रस भीनो प्रति पोर॥ सिद्धि होयगो सिगरो कारज प्रातहि मिल्यो प्रान पिय मोर। हरीचन्द युग युग चिरजीवो मांगत ग्वलिनि आंचर छोर ॥ १॥

श्री स्वामिनीजी की बधाई

परज॥ एरी आज बाजे छे रंग बधावना। कीरति उदर उदय। गिरि प्रगट्यो अद्भुत चन्द सोहावना। आजु सुफल भयो नन्द महोत्सव नर नारी मिलि गावना। हरीचन्द व्रषभानु बबा सौं प्रेम। बधायो पावना ॥ १॥

हिंडोरा

परज॥ एरी आज झूले छे स्याम हिंडोरैं। वृन्दावनरी सघन कुंज मैं यमुना जी लेतां हलोरैं। संग प्यारे वृषभाननन्दिनी सोहे। छे रंग गोरै। हरीचन्द जीवन धन वारी मुख लखती चित चोरैं ॥ १॥

रथयात्रा

सारंग॥ कुंज कुंज रथ डोलै मदन मोहन जू को सेत धुजा तामैं।

उड़ि उड़ि सोहै। तैसोई सघन घन छाय रह्यो नभ बीच। देखत ही मन मथ मन मोहै। दौरत मैं फर हरत पीताम्बर मनु दामिनि घन नाचै। सेत धुजा बग पांति छवि कछु कहिनि जात निरखत अति मन आनन्द राचै। द्रुम द्रुम कुंज कुंज बन बन तीर नीर घूमन रथ फिरि आवै। हरीचन्द बलि जाय छवि देखि सुख पाय तन मन धन सब वारि कै लुटावै ॥१॥

मकर संक्रान्ति

टोड़ी॥ करत दोउ एहि दिन खिचरी दान। जामें सदा मिले रहैं ऐसेहि गौर श्याम सुख खान। चिर बस्त्र धरि परम नेह सों जोरि पान सो पान सो पान॥ ।हरीचन्द त्योहार मनावत सखिजन वारत प्रान॥१॥

दीनता

यथा रुचि॥ कहुरे श्री वल्लभ राज कुमार। दीन उधारन आरत नासन प्रगट कृष्ण अवतार। काहे भरमायो डोलत मनसा धन करत हजार। यह भव रुज क्यौं हू नहिं जैहैं बिना चरन उपचार। कौन पतित सो नेम निबहि है जो बहु अघ आगार। श्रुति पुराण कछु काम न ऐहैं यह तोहि कहत पुकार। बुरे दिनन को साथी कोउ नहिं मात पिता परि वार। हरीचन्द तासों विट्ठल भजु यहै अहै श्रुति सार॥२॥

तथा॥ करनी करुणासिंधु की कापै कहि जाई। अति उदार गुणगन भरे गोवरधन राई। तनिक तुलसि दल के दिये तेहि बहु करि मानैं। सेवा लघु निज दास की पर बत सी जानैं। अजामेल सुत आपनो तुव नाम पुकार्यो। ताको अघ सब दूरि कै तुम तुरत उबार्यो। कहा व्याध गजराज सों करनी बनि आई। कहा गीध गणिका कियो तार्यो तुम धाई। कहा कपिन को रूप है का गुण बड़ि आई। तिनसों बोले बंधु मे ऐसी करुणाई। कहा कपिन को रूप है कहँ त्रिभुवन स्वामी। ताकी अग्र भुज सारथी किये चरण गुलामी।

कहां ग्वाल श्री ग्वालिनी करनी की पूरी। जिन के संग बनमें फिरे हरि करत मंजूरी। ब्रज के मृग बसु भीलनी तृन वीरुध जेते। बंधु सरिस माने सबै करुणा निधि तेते। कहाँ अधम अघ सो भयो हरिचन्द भिखारी। जिहि माधौ सह जहि लियो गहि बाँह उबारी॥१॥

ग्रीसम ऋतु

सारँग॥ केसर खौर श्याम सुन्दर तन निरखत सब मन मोहै। मनु तमाल में चम्पक वेली लपटि रही अति सोहै। मनु घन मे दामिनि लपटानी उपमा को कबि कोहै। हरीचन्द बनते बनि आवत ब्रज त्रिय मुख छबि जोहै॥१॥

प्रबोधिनी

यथा॥ कुंजन मंगल चारु सखीरी। थापे दीने कलस बधाए तोरन बाँधी द्वार। गावत सबै सोहाग छबीली मिलि सब ब्रज की बाम। बन्ना बनि आयो नँद नन्दन मोहन कोटिक काम। रंग रंगीली जोड़ी चढ़िके सिहरो सोहत सीस। देत असीस सासुरे की सब जीओ कोटि बरीस। बन्ना बहू पास बैठारी जोरि गाँठ इक साथ। हरीचन्द को देत बधाई दुलहिन अपने हाथ॥१॥

दीपावली

रेमन॥ कबिन सों साँचेहि चूक परी। दीप सिखा की उपमा जिन तुलि प्यारी हेत धरी। वह दाहत यह अंग जुड़ावति वह चंचल थिर यह। वह निज प्रेमिन परम दुखद यह सदा सुखद पिय देह। बरसै धूम स्वच्छ अति ही यह रैन दिना इक तास। वह परि छिन औरवस यह निज रूप सर्वत्र प्रकाश। वह सनेह आधीन और के यह संदेह भर पूर। हरीचन्द दीपक प्यारी की नहिं कोउ विधि सम तूर॥१॥

राग बसन्त

कहो कहो पिय प्यारे कित तुम आजु बसन्त मनाय। कौन को दियो सुहागराल तुम कित रहि गये लुभाये॥१॥ केसर चरचित

चारु कपोलन पीक छाप अति सोहे । नैन गुलाल रंग रंगे रागे देखत ही मन मोहे ॥ २ ॥ सिथिलित पाग माल कुम्हिलानी स्वेद सुगंधन सानी । धन धन भाग आजु ताके जो आन पिया मन मानी ॥ ३ ॥ आवो प्यारे रसिक बिहारी मेरेहू उर लागो । हरो पीर मेरेहू उरकी इतही छिन अनुरागो ॥ ४ ॥ तुम कहँ जदपि एकही सी सब बहुत किनवल किसोरी । पै हम को तो प्रानन सों बढ़ि तुम तुमही सो होरी ॥ ५ ॥ हम हूँ जिय की साध पुजावें पिय यहि कारन लपटाई । तनिक नैन भरि चितवनि ही में कोटि स्वर्ग सुख पावें ॥ ६ ॥ प्यारे तुम चाहो किन चाहो हमहि नाहिं गनि दूजी । सब बस छाँड़ि मीत रहि हैं हम तुम पद पंकज पूजी ॥ ७ ॥ हमरे तन मन धन सब बस तुम तुमहीं सों सबहि बड़ाई । सपनहुँ तुम कहँ जो बहु नायक जानै ताहि दुहाई ॥ ८ ॥ लाखन तिय संग केलि करो तुम मोहिं यामें सुख भारी । सो सुहाग बल होहि जगत में कोटि सुहागिनि नारी ॥ ९ ॥ मेरे पिय सों जग सुख पाओ करो सबहि मन भायो । हरीचन्द अपनो पीतम में भाग न ऐसो पायो ॥ १० ॥ १ ॥

बसन्त

खेलत बसन्त राधा गोपाल ॥ इत ब्रज बाला उत ग्वाल बाल ॥ धु० ॥ गावत बहार दै बिबिधि ताल ॥ बाजत मृदंग आवज रसाल ॥ तहँ उड़त विविध बुक्का गुलाल ॥ गारी दै दै बहु करत ख्याल ॥ बाढ़ी सोभा अति तेहि काल ॥ हरिचन्द निरखि हरखित बिसाल ॥ १ ॥

दीनता

यथा रुचि ॥ गुन गन बिट्ठल नाथ के कहँ लग कोउ गावै । अमित महिम लघु बुद्धि सों कछु कहत न आवै । दैवीजन अपने किए कलि जीव उबारे । माया तिमिर मिटाइ कै खल कोटि उधारे । अंगीकृत जाको कियो ताको नहिं त्याग्यो । अपराधहि मान्यो नहीं भक्तन अनुराग्यो ॥ सरन पर्यो त्रय ताप को मेट्यो छन माहीं ॥ हरीचन्द

की गहि भुजा यामें सक नाहीं ॥ १ ॥

तथा

बिहाग ॥ गावत गोपी कोकिल बानी । श्री ब्रषभानु राज से राजा कीरति सी जाकी पटरानी । गावत सारद नारद सुक मुनि सनकादिक ऋषि जानी । गावत चारिहु बेद शास्त्र षट कहि कहि कै कछु थक थक हानी । गावत गुन अज ब्यासादिक शिव गीत परम रस सानी । मन क्रम बचन दास चरनन को गावत हरीचन्द सुखदानी ॥ १ ॥

बधाई

बिहाग ॥ गावत रंग बधाई सब मिलि गावत रंग बधाई । कीरति के प्रगटी श्री राधा मोहन के मन भाई । नर नारी सब मिलि के आई गावत गीत सुहाई । हरीचन्द कछु जस बरनन करि बहुत निछावरि पाई ॥ १ ॥

तथा

राइसा ॥ गावो सखि मंगल चार बधायो ब्रषभानु को । मुनी चलीं गृह गृह तें साजनि सबै सजाय । बरनि छबि कछु कहि न आवै चन्द उद्यो आइ । भयो अति आनन्द तेहि छन कह्यो कापै जाय । ग्वार नाचैं तार दै दै देत बहुत बनाय । एक गावत एक नाचत एक परसत पाय । गारि देत दिवाइ सब को सुख कह्यो नहिं जाय । देत सब कोऊ बधाई रतन बसन लुटाय । रंक भये कुबेर मानहुं दान पाइ अघाय । भयो जौन अनन्द तेहि छिन कौंन पै कहि जाय । हरीचन्दहि बहुत दीनो दान तहां बुलाय ॥ १ ॥

तथा

सारंग ॥ ग्वाल सब हेरी हेरी बोलैं । कीरति के घर कन्या जाई यह मुख सों कहि डोलैं । आनंद मगन गनत नहिं काहू मार दही के गोलैं । हरीचन्द को देत बधाई भक्ति रतन मन मोलैं ॥ १ ॥

तथा ॥ गावत सबै बधाय धाय । आनंद भरे करत कौतूहल बहु

वायंत्र बजाय जाय। गोपी आई मंगल कर लै कुम कुम मुखन लगा-
य गाय। श्री मुख लखि आनन्द न सबहीं नैनन रही बलाय लाय।
रावल गली सुगंधिन छिरकी बहु विधि बसन बिछाय छाय। ह-
रीचन्द शोभा लखि सुर नभ तिय सह रहे लुभाय भाय॥ १॥

हिंडोला

परज॥ गिरधर लाल हिंडोरैं झूलैं। पच रंग फूल हिंडोर बनायो
निरखि निरखि जिय फूलैं। को कहि सके भई जो शोभा कालिन्दी
के कूलैं। हरीचन्द यह कौतुक लखि के देव विमाननि भूलैं॥ १॥

दान लीला

सारंग॥ ग्वालिनि दै किन गोरस दान। करुन पुन्य यह गोबरध-
न गिरि तीरथ सौं बढ़ि मान। गहन चिकुर मुख पूरन बिधु पै छा-
या सम लखु आन। बड़ो परब तुव भाग मिल्यो है करुन बिलम्ब
सुजान॥ सिसुता पूरि प्रगट प्रति पद नव यौवन संधि समान॥
हरीचन्द कंचन अंगन दै हरि सुपात्र पहिचान॥ २॥

श्री ठाकुर जी की बधाई

यथा रुचि॥ गोकुल प्रगटे गोकुल नाथ। प्रमुदित लता गोबरधन
यमुना सब ब्रज बासी किये सनाथ। इक गावत इक ताल बजावत
इक नाचत गहि गहि के हाथ। एक बसन पट देत बधाई इक लाव-
त घसि चन्दन माथ। आनंद उमगे गनत न काहू बाल बिरध सब
एकहि साथ। हरीचन्द सुर फूलन बरषत शुक नारद गावत गुनु
गाथ॥ २॥

श्री स्वामिनी जी की बधाई

परज॥ घर घर आजु बधाई बाजे। टीको लै आवति ब्रज बनिता की-
रति को घर राजे। इक गावत इक करत कोलाहल मनु पायो है
राजे। हरीचन्द छबि कहि नहिं आवे कवि मति या थल लाजे॥ १॥

बर्षा

मल्लार ॥ घिरि घिरि घोर घमक घन धाये। बरसत बारि बड़ी बड़ि-बूंदन कुंज मराडल पर छाये ॥१॥ दादुर बक पिक मोर पपीहा चात्रिक सोर मचाये ॥ दामिनि दमकति दसहु दिसा सौं बहु खद्योत चमकाये ॥२॥ कुसुमित कुंज कुन्द की कलिका केतकि कदम सुहाए ॥ हरीचन्द हरिचन्द बदन छबि लखिलखिकाम लजाए ॥३॥

असीस

यथारुचि ॥ चिरजीवो यह जोरी युग युग चिरजीवो यह जोरी ॥ श्री यशुदा नन्दन मनमोहन श्री वृषभान किशोरी ॥ ध्रु० ॥ नित नित ब्याह नित्य ही मंगल नित नित सुख अति होई ॥ श्री वृन्दाबन सुख सागर को समुद्र पार न पावे कोई ॥१॥ एक रूप दोउ एक बयस दोउ दोऊ चन्द चकोर ॥ हरीचन्द जब लौ शशि सूरज तब लौं जीयो जोर ॥२॥

तथा ॥ चिरजीवो मेरो श्री वल्लभ कुल। माया मत खर तिमिर दिवाकर प्रेम अमृत मय रस सागर पुल। कलि खल गन बल हरख रसिक जन शरन करन बिरहिन बिरहा कुल। हरीचन्द दैवी जन प्रियतम पतित उधारन महिमा अन तुल ॥२॥

ब्याहुला

यथारुचि ॥ चलो सखि मिलि देखन जैये दुलहिनि राधा गोरी जू। कोटि रमा मुख छबि पै वारौं मेरी नवल किशोरी जू ॥ घघरी लाल जर कसी सारी सोंधे भीनी चोली जू। मरवट मुख में सिर पै मोरी मेरी दुलहिया भोली जू। नक बेसर कन फूल बन्यो है छबि कापैं कहि आवै जू। अनवट बिरिया मुंदरी पहुंची दूलह के मन भावै जू ॥ ऐसे बना बनी पैं री सखि अपनो तन मन वारी जू। सब सखियाँ मिलि मंगल गावत हरीचन्द बलिहारी जू ॥१॥

श्री स्वामिनीजीकीबधाई

चलीं बधाई गावन के हित सुन्दर ब्रज की नारी। अंचल उड़त हँस गति चंचल कर ले मंगल थारी। पीत बसन कटि कसन रसन छवि रसनि कहौं किमि गाई॥ दामिनि मैं सन्ध्या घन तामैं फिरि दामिनि लपटाई। नूपुर रुनित कुनित कंकनकर हार चुरी मिलि बाजे। मनु आनँद भरि सब तन भूखरा गाजत साजत राजे। चौमुख चारु दीप थालन पर मंगल साज सजाई। मनहुं सनाल कमल पर कमला कनक लता चढ़ि धाई। धावत खसत सुमन बेनी तें उपमा कहं कवि हारैं। मनु कोमल पग गोनि चुकर गन फूल पाँउड़े डारैं। ऊंचे सुर गावत छवि छावत बरसावत रसभाईं॥ इक सों इक बढ़ि अतिहि उताइल कीरति मंदिर आईं। निरखत मुख सुख अति हिय बाढ़्यो वारि सुनत मन दीनो। आजु सखी नंद के घर को सुख सांच बिधाता कीनो। नाचत मुदित करत कौतूहल गावत दै कर तारी। हरीचन्द आनँद मैं आनँद युगल इकत्र निहारी॥१॥

श्री चंद्रावली जीकीबधाई

यथा रुचि॥ चन्द्रभानु घर बजत बधाई। श्री चन्द्रावलि ब्रज प्रगटाई। हरित भये तरु पल्लव गोभा। कुंज भवन बाढ़ी अति शोभा। बोलि उठे कल कोकिल कीरा। डोलो तिहि छन त्रिविधि समीरा। उनए घन मनु आनँद छाये। गरजि मन्द दुन्दुभी बजाये। भादौं सित पंचमी सुहाई। स्वाती सोम प्रहर निसि आई। चन्द्र कला की कोश सिरानी। चंद्रावलि प्रगटी सुखदानी। गुप्त भेद नहिं कछु प्रगटायो। सो श्री विट्ठल प्रगट लखायो। रूप अगार छवि नैन निहारी। हरीचन्द सरवस बलिहारी॥१॥

ढाढ़ी

यथा रुचि॥ चलो आज घर नन्द महर के प्रेम बधाई गावैं। भादौं कृ-स अष्टमी दिन श्री कृष्णचंद्र यश गावैं॥ तोरन तनी पताका द्वारन

भवन भीर भई भारी। री द्वादिन कर पगन समेटे चलियो भवन म-झारी। जहाँ इंद्र चंद्रादि देवता कर बन्दे हैं ठाढ़े। कौन सुनैगो आ-ज हमारी प्यारी कर हित गाढ़े। प्रेम पंथ को पग है न्यारो तातैं मन य-ह आवै। हरीचन्द लखि लाल लड़इतो नव निधि रिधि सिधि पावै॥१॥

बिहार

केदारा॥ चले दोउ हिलि मिलि दै गल बाहीं। फैली घटा चहूं दि-शि सुन्दर कुंजन की मर छाहीं। अपने कर सों पिय श्रम जल पोंछत। प्यारी कहत नाहीं नाहीं। हरीचन्द बिजन डोलावत श्रम लखि बिधि-हरि आदि सिहाहीं॥१॥

रथ यात्रा

सारंग॥ चारु चल चक्र चित्रित विचित्रित परम जगत बिजयी जयति कृष्ण को जैत्र रथ। अति तरल तर बलाहक शैब्य सुग्रीव मणि पुष्प तुरंग योजित। चलत पथ सुपथ॥ फरहरत धुज उड़त नव पताका परम कलस कल इंद्र सम सकल चमकत अकथ॥ चक्र तापर रह्यो तासु तल वायु सुत विनत विनता सुअन गरजि अरि करत हथ। खंभ कूवर छत्र चारु डांड़ी। चारु विविध मनि जटित उघटित वेद शब्द कथ। झांझ झन कत करत घोर घंटा घहरि घने घुंघरू घिरत फिरत मिलि एक जथ। फुरवी सूरज सु-खी सुखी लखि जन दुखी दैत्य दल झल मलत झालरन मुक्त नथ। बैठि दारुक तदारुक करत अश्व को चलत मन बेग सम बेग गति शब्द नथ। देव ऋषि करत जय शब्द सुर छल दुरत सूत बंदी बिरद कहत बहु भांति गथ। थकित हरिचन्द दृग सरस शोभा निरखि हरखि सुम नन बरषि लहीं चारों अरथ॥१॥

बाल लीला

यथा रुचि॥ छोटोसो मोहन लाल छोटे छोटे ग्वाल बाल छोटी छो-टी चौतनी सिरन पर सोहैं। छोटे छोटे भँवरा चकई छोटी छोटी लिए छोटे छोटे हाथन सों खेलैं मन मोहैं। छोटे छोटे चरण सों चलत

घुटुरु वन चलीं व्रज वाल छोटी छोटी छवि जोहैं। हरीचन्द छोटे छोटे कर पैं माखन लिए उपमा दर निस कैं ऐसे कवि कोहैं॥ १॥

दान लीला

टोड़ी॥ छांड़ो मेरी बहियां लाल खीवी यह कौन चाल हाहा तुम पर-सत तन औरन की नारी। चैंयुरी मेरी मुरुक गई परसत तन पीर भई॥ भीर भई देखत सब ठाढ़ी ब्रज नारी॥ बाट परी ऐसी बात मोहिं तो न-हीं सोहात काहे इतरात करत अपनो हठ भारी। हरीचन्द लेहु दान ना-हीं तो परैगी जान नेक करो लाज छांड़ो खैंचत गिर धारी॥ २॥

आशीष

बिहाग॥ युग युग जीबो मेरी प्रान प्यारी राधा। जब लौ यमुन जल रवि शशिजग थल तब लौ सुहाग लहो सुयश अगाधा॥ नित नित रूप बाढ़ो परस पर प्रेम गाढ़ो नवल बिहार करि हरो जन बाधा॥ हरिचंद रे आशीष कहत जियो लाख बरीस तुमरे प्रगट भये पूरी सब साधा॥ १॥

दीपावली

सथा रुचि॥ यमुन जल बढ़ी दीप छवि भारी॥ ध्रु०॥ प्रति बिंबित प्रति बिंबल हर प्रति तहं राजत पिय प्यारी॥ १॥ तैसी दीन भतर तारा-वलि तरल वायु गुण होई। तैसेहि उड़त गगन गुब्बारे छुटत दारु प-ति जोई॥ २॥ अवनि नीर आकाश प्रकाशित दीपहि दीप लखाई। मनु ब्रज मराडल जोति रूप ता अपुनी प्रगट दिखाई॥ ३॥ सुख-प्रकाश रंजित सबही थल सो भानहिं कहि जाई॥ हरीचन्द राधे म-न मोहन रहे तेवहां रमनाई॥ ४॥

गणेश चतुर्थी को पद

राग यथा रुचि॥ जैजै गोपी गणेश वृन्दावन चिंता मणि कर ऋद्धि सिद्धि दायक ब्रज नारा प्राण प्यारे॥ वनिता कुच मोदक गहि-बार बार केलि करण प्रिया बेणि का भुजंग हस्त कंज धारे। मान-

रुदै पद भासत अंकु सादि चिन्ह लसत हंसत हंसत अभय वरद प-
रम प्रान के रखवारे ॥ सुंड दण्ड बाहु मेलि करिनि संग सुगज केलि ।
करत हैं हरिचन्द निरखि हरखि प्रान वारे ॥ १ ॥

नित्य

बिहाग ॥ जय श्री मोहन प्राण प्रिये ॥ ध्रु० ॥ श्री वृषभानु नंदिनी ।
राधे ब्रज कुल तिलक त्रिये ॥ १ ॥ जापद रज शिव अज बंदत नित ।
लल चत रहत हिये ॥ २ ॥ तिन हरि संग बिहरत निशंक निस दिन ।
गल बांह दिये ॥ ३ ॥ जा मुखचन्द मरीच देखि सब ब्रज नर नारि ।
जिये ॥ ४ ॥ तिनको जीवन भूरि होइ के सहजेहि स्वबस किये ॥ ५ ॥
इन्दा दिक दिकपति जाके डर बरतन रुखहि लिये ॥ ६ ॥ हरीचन्द ।
सो मान जासु लखि सहजहि बहुत भिये ॥ ७ ॥

बन्दना

बसन्त ॥ जै वृषभानु नंदिनी राधे मोहन प्रान पियारी । जै श्री रसि-
क कुंवर नंद नन्दन मोहन गिर वरधारी ॥ १ ॥ जै श्री कुंज नाइ का-
जै जै कीरति कुल उजियारी ॥ जै वृन्दावन चारु चंद्रमा कोटि मदन
मद हारी ॥ २ ॥ जै ब्रज तरुन तरुनि चूड़ा मनि सखियन मैं सुकुमारी ॥
जयति गोप कुल शीश मुकुट मनि नित्य सत्य बिहारी ॥ ३ ॥ जयति ।
बसन्त जयति वृन्दावन जयति खेल सुखकारी । जय अद्भुत यश ।
गावत ही शुक मुनि हरिचन्द बलिहारी ॥ ४ ॥

स्फुट

यथा रुचि ॥ जुरे हैं कूरे ही सब लोग ॥ जैसे स्वामी परि कर तैसे ते-
सोही संयोग ॥ ध्रु० ॥ बैठे दोना नाथ कहाए करि इत उत कछु काज ॥
एक एक की लाख इन्होंने गाई तजि के लाज ॥ १ ॥ जुरे सिद्ध सा-
धक ठगिया से बड़ो जाल फैला यो ॥ मूड़यो जिन्हें मिटायो तिन-
को जग सो नाम धरायो ॥ २ ॥ आजु नाहिं तो कलया आसा ही में ।

दीनहिं राख्यो ॥ हरीचंद मन लै निर मोहिन स्वेत छुम नहिं भाख्यो ॥३॥

दीनता

देव गन्धार ॥ जोपै श्री बल्लभ सुत नहिं जान्यो । कहा भयो साधन अनेक मैं करि कै वृथा भुलान्यो । चाद रसिक ता अरु चतुराई जो यह जीव न जान्यो । मस्यो वृथा विषया रस लम्पट कठिन कर्म मैं सान्यो । सोइ पुनीत प्रीति जेहि इन सों वृथा वेद मथि छान्यो । हरीचन्द श्री विट्ठल बिन सब जगत झूठ करि मान्यो ॥१॥

तथा

आसावरी ॥ जे जन अन्य आसरो तजि श्री विट्ठल नाथहि गावैं । ते बिन श्रम यागिहि साधन मैं भव सागर तरि जावैं । जिन के मात पिता गुरु विट्ठल और कहूं कोउ नाहीं । ते जन यह संसार समुद्रहि बसरबुस्त कर जाहीं । जिन के श्रवण कीरतन सुमिरन विट्ठल ही को भावै । ते जन जीवन मुक्त कहावैंहिं सुख देखे अघ जावै । जिन के इष्ट सखा श्री विट्ठल और बात नहिं प्यारी । तिन के बस में सदा सर्वदा रहत गोवरधन धारी । जिन मन काय करम बच सब विधि श्री विट्ठल पद पूजो । ते कृत कृत्य धन्य ते कलि में तिन सम और न दूजो । जो निशि दिन श्री विट्ठल विट्ठल विट्ठल ही मुख भावैं । हरीचन्द तिनके पद की रज हम अपने शिर लावैं ॥२॥ तथा

यथा रुचि ॥ जन सों कबहूं नाहिं चली । सदा सर्व्वदा हारत आये मानत बात भली । कहा कियो तुम बलि राजा सों चतुराई न चली । बांधत गये बंधाइ आपुही व्यर्थ बने छली । भीषम ने परतिज्ञा टारी चक्र गहायो हाथ । अरजुन को रथ हांकत डोले बन मैं लीने साथ । यशुदा जू सों हाथ बंधायो नाचे माखन काज । मैं रिनिया तुमरो गोपिन सों कहो त्यागि कै लाज । रिन बहु जानि छाड़ि कै गोकुल भागे मथुरा जाय । सदा सर्व्वदा हारत ~ आये भक्तन सों ब्रजराय । हमसों हूं हठ पनही बनि है कबहूं न जै हैं जीत । तासों तारो हरीचन्द को मानि पुरानी ।

प्रीति ॥ ३ ॥

दीप दान

यथा रुचि ॥ यमुन जल बढ़ी दीप छबि भारी । प्रति बिम्बित प्रति बिंब लहरि प्रति नहँ राजत पिय प्यारी । तैसी ही नभ तर तारा बलि तरल बायु गुन होई । तैसेहि उडत गगन गुब्बारे छुटत-हाक गति जोई । अवनि नीर आकाश प्रकाशित दीपहि दीप लखाई । मनु ब्रज मण्डल जोति रूपता अपनी प्रगट दिखाई । सुख प्रकाश रंजित सबही थल शोभा नहिं कहि जाई । हरीचन्द राधे मन मोहन रहे त्यौ हार मनाई ॥ २ ॥

बधाई

राग कान्हरा ॥ जो पै श्री राधा रूप न धरतीं । प्रेम पंथ जग प्रगट न होतो ब्रज बनिता कहा करतीं । पुष्टि मार्ग थापित को कर तो ब्रज रहतो सब सूनो । हरिलीला काके संग करते मंडल होतो ऊनो । रास मध्य को रमतो हरि संग रसिक सुकवि कहा गाते । हरीचन्द भव के भय सौं भजि किहि के शर नहिं जाते ॥ १ ॥ २ ॥ जै जै जै जै जै श्री-राधा । जबते प्रगट भई बरसाने नासी जन के तन की बाधा । सब सखियाँ नन्दित मनमैं अति चरन कमल अवराधा । हरीचन्द ब्रज चन्द पिया की प्रेम पंथ जिन साधा ॥ १ ॥

बधाई

तथा ॥ यशोदा माई लेहु हमारी बधाई । धन्य भाग तेरे सुनि प्यारी जनम्यो कुवँर कन्हाई । चिरजीवो जबलौं यमुना जल गंगा जल सब देवा । जबलौं धरा अकाश और है जब लौं हरि की सेवा । तब लौं चिरजीवो जग भीतर हरीचन्द तव लाला । मंगल गीत बिनोद मोद मनि मंगल होइ रसाला ॥ १ ॥

श्री राम नौमी वा दशहरा को कीर्तन

सारंग ॥ जयति राम अभिराम छबि धाम पूरन काम श्याम वपु बाम

सीता बिहारी। चराड को दराड बल खराड कृत दनुज बल अनुज सह सहज गुन रूप धारी। रक्ष कुल अनल बल प्रबल पर्जन्य सम धन्य द्विज जन पक्ष रक्षकारी। अवध भूषण समर विजित दूषण दुष्ट विगत दूषणा चतुर धर्म चारी। खर प्रखर खर अगिन लंक दृढ़ दुर्ग दल दलमलन बाहु मारीच मारी। दे अवण अनुज पद अवण रावण शमन शरणमन भय दमन हरिचन्द वारी॥ १॥

जगाने के पद

जागो मेरे प्राण पियारे। बलि बलि गई दिखाओ शशिमुख उदो जगत उजियारे। मेटहु बिरह ताप दरशन दै बोलहु मधुरे बैन। आलस भरे रैन रंग राते खोलहु पंकज नैन। मेरे सर वस जीवन माधो प्रात भयो बलि जागो। कछु अलसाइ जँभाइ मंद हँसि हरीचन्द गर लागो॥ २॥

प्रबोधनी के पद

यथारुचि॥ जागो मंगल मूरति गोबिंद बिनय करत सब देव। तुव सोए सबही जग सोयो लखहु न अपनो भेव॥ बन्दी बेद खरे सब गावत अस्तुति करत तुम्हारी। नारद सारद बीन बजावत जय जय बचन उचारी॥ किन्नर अरु गंधर्व अप्सरा तुम रो ही यश गावैं। बाजन बिबिध बजाइ तुम्हें सब करि मनुहार जगावैं॥ जगके मंगल काज होत नहिं बिनु तुव उठे कृपाल। तुव जागे सबही जग जागत तासों उठहु दयाल॥ निद्रा तजहु रमा पति के पद चहुँ दिशि मंगल मचै। पंकज नयन बिलोकि बिमल यश हरीचन्द हूं बँचै॥ १॥

हिंडोला॥ झूलत हैं राधिका श्याम संग नव रंग सुख दहिं डोरे। गावत माल्लरराग रस भरे तान मान मधुरे सर जोरे। इत गिरहीं ब्रज नारि नवेली पचरंग चीर पहिरि चित चोरे। पचरंग छवि रस युगल माधुरी कहिनि जाइ श्यामल रंग गोरे। बरषत मंद मंद घन तेहि छन पंचरंग बादर सब सुख बोरे। हरीचन्द लय भानुनंदनी कोटिन शशिछबि छिन महं

छोरे **हिंडोला**

रायसा ॥ झूलत राधा रंग भरी कुँजहिं डोरे आज ॥ संग सब सखी सुहा-
वनी साजे सुन्दर साज ॥ १ ॥ झूलन आये मोहन सुन्दर मदन मुरारी ॥
गावत ऊँचे सुर भरि संग मिलि ब्रज की नारी ॥ २ ॥ ताल मुरज डफ आ-
वज साथ परवावत चंग ॥ बाजत लय सुर साजत बीना और उपंग ॥ ३ ॥
बिच बिच बंशी गूंजत मधुर मधुर घन घोर । धुनि सुनि जासु कोइ लि-
यन तरुन मचाई रोर ॥ ४ ॥ इक उतरत इक झूलत एक चढ़त नहिं नं-
धाय ॥ एक रहत गहि डोरी दूजी देत झुलाइ ॥ ५ ॥ इक नाचत इक
गावत एक बजावत तार ॥ एक युगल छबि लखि के तन मन डारत वार ॥
६ ॥ रम कनि में रंग वारयो छबि कछु कही न जाइ ॥ झोटा लगि रहे डा-
रन विविध बसन फह राइ ॥ ७ ॥ शोभा को कहि भाषै झूलत बाढ़ी जौन ।
हरीचन्द लखि लखि के कवि मति रसना मौन ॥ ८ ॥

ग्रीष्म ऋतु

झीनो पिछोरा सोहै आजु अति झीनो पिछोरा सोहै ॥ चन्दन लेप नन्दन-
न्दन तन देखत ही मन मोहै । पारिजात मंदार रही लसि फूल छरी क-
र लीन्हे । सांझ समय बनतें बनि आवत गोधन आगे कीन्हे । गोरज छु-
रित अलक सब सुन्दर ब्रजबालन दरसायो । हरीचन्द मुख चन्द देखि-
के बासर ताप नसायो ॥ १ ॥

नित्य

सोरठ ॥ ठाढ़े हरि तरनि तनया तीर । संग श्री कीरति कुमारी पहिरि
झीने चीर । उरनि फूलनि माल औंधे भँवर गन की भीर । हाथ क-
मल लिये फिरावत राधिका बलबीर । सांझ समय सोहावनो अति
बहत त्रिविधि समीर । वारने हरिचन्द छबि लखि श्याम गौर शरीर ॥ १ ॥

धमार

सिंदूरा ॥ ठेकाया ब्रज को तेरे माथे कौने दयो । जो तू लंगर ढीठ उपाधी

ऊधम रूप भयो ॥ काहु न डरत करत मन की नित ठानत रंग नयो। हरी चन्द ब्रज डगर डगर बद नामी ढीज बयो ॥ २ ॥

दीपचन्दी

यथारुचि ॥ तुव बिनु पिय को घर ऊँधि यारो ॥ ध्रु० ॥ यदपि न हूं दिठि प्रगटि स्वास मद बिरहा नल संचारो ॥ १ ॥ कछु न लखात नाहि अति व्याकुल दृग भर लावत भारो ॥ २ ॥ प्रिये प्रिये कहि प्रति को ननमें ढूंढ़ि रहत घर सारो ॥ ३ ॥ तू इत बैठी बदन बनाये उन तहं बिकल बिचारो ४ ॥ हरीचन्द उठि चलिरी प्यारी लाँउ गरे पिय प्यारो ॥ ५ ॥

दीनता

यथारुचि ॥ तुम सम नाथ और को करि है ॥ ध्रु० ॥ हम से हीन दीन जन हूबे कौन कृपा बिस तरि है ॥ १ ॥ को निज बिरुद सम्हारन कारन दोरि दीन दुख हरि है ॥ २ ॥ जानि क्षुधित हरिचन्द अशन को भेजि सुधा प-रि हरि है ॥ ३ ॥

तथा

तथा ॥ तुम्हें तो पति तनही से प्रीति ॥ लो कहु वेद बिरुद्ध चलाई क्यों-यह उलटी रीति ॥ ध्रु० ॥ सब बिधि जानत हो निश्चय करि तुम सो छि-प्यो न नेक ॥ वेद पुरान प्रमान तजन को मेरो यह अविवेक ॥ १ ॥ महा पतित सब धर्म बिवर्जित श्रुति निन्दक अघ खान। मरयादा ते रहित म-नस्वी मानत करत सबै मन मान ॥ २ ॥ जानत भए अजानक हो क्यों रहे तेल दे कान ॥ तुम्हें छाड़ि जग को नहिं जो मोहि बिगस्यो करत बखा-न ॥ ३ ॥ बलिहारी यह रीझ रावरी कहाँ खुटानी आय। हरीचन्द सो नेह निबाहत हरि कछु कही न जाय ॥ ४ ॥

तथा

तुम्हारो सांचो हम मैं नेह। कबहूं नाहिं छांड़ि हो हम को दृढ़ ब्रत लीन्हों एह। प्रेम सत्य तव और सब मिथ्या यामैं कछुन संदेह। हरीचन्द जो याहि न मानै तिन के मुख मैं खेह ॥ १ ॥

तथा

तुमै तो पतित नहीं सों प्रीति लोकहु वेद विरुद्ध चलाई क्यौं यह उलटी रीति। सब विधि जानत हौ निश्चय करि तुमतें छिप्यो न नेक। वेद पुरान प्रमान तजन को मेरो यह अवि वेक। महा पतित सब धर्म्म विवर्जित श्रुति निन्दक अघ खान। मरयादा ते रहत सदा स्त्री करत सदा मन मान। जानत भये अजान कहौ क्यों रहे तेल दै कान तुमहिं छोड़ि जग कोजो नहिं बिगर्‍यो करत बखान। बलि हारी यह रीझ रावरी कहाँ खुटानी आय। हरीचन्द सों नेह निबाहत हरि कछु कहा न जाय॥ १॥

असीस

कान्हरा॥ तिहारो घर सुबस बसो महारानी। कीरति जू तुमरे घर प्रगटी ब्रज जननी ठकुरानी। जाके भए सकल सुख बरसैं जिमि सावन को पानी। अति आनन्द भयो गोधन मैं हम यह आगम जानी। कोउ गावैं कोउ देत बधाई वेद पढ़त मुनि ज्ञानी। हरीचन्द प्रगटी श्रीराधा मोहन के मन मानी॥ १॥

दीनता

यथारुचि॥ नेई धन धनया कलि युग मैं जिन जाने श्री विट्ठलनाथ। जीवन जगत सुफल तिनहीं को जौन बिकाने इनके हाथ॥ धरम मूल इक इनकी पदरज इनके दासहि सदा सनाथ। भक्ति सार इनको आराधन इनहीं को गावत श्रुति गाथ॥ इनके बिनु जे जीवत जगमें ते सब स्वास लेत जिमि भाथ। हरीचन्द चलु सरन इनहिं के धरि के चरनन पर निज माथ॥ १॥

दीपा वली

यथारुचि॥ दीपन उलटी करी सहाय॥ ध्रु०॥ चली गई पिय पास प्रगट मग काहुन परी लखाय॥ १॥ अँधियारी मैं तो भय भारी मुख ससि नाहिं दुराय॥ २॥ इत प्रकाश मैं मिलि अल बेली एक भई चम काय॥

३॥जग मगे बसन कनक मनि भूषन सब भये सव आय॥ ४॥ हरीचन्द मिलि के वियोग तम दीनो तुरतन साय॥ ५॥

सेहरा

यथा रुचि॥ दूलह श्री ब्रज राज फूलि आजु बैठे न कुंजन॥ ध्रु०॥ फूलन को सेहरो फूलनि के अभरन फूलन के सब साज॥ १॥ फूली सखी गीत गावैं देव फूल बर सावैं फूल्यो सकल समाज॥ २॥ फूली श्री राधा प्यारी देखि फूली ब्रज नारी हरिचन्द फूल्यो अति आज॥ ३॥

दान एकादशी और बावन द्वादशी

दान लेन है ही जन जान्यो॥ कै तुम नन्द राय के ढोटा कै बावन जिन बलि छल ठान्यो॥ १॥ तीन पैर कहि छोटे पगसों उन छल करिके देह बढ़ाई। तुम गोरस के मिस कछु और रस लीनो कलिंदे ब्रज राई॥ २॥ वे छोटे कपटी तुम खोटे एकहि से विधि रचे सँवारी॥ हरीचन्द वेतो बावन रहे तुम छप्पन निकसे गिरधारी॥ ३॥

दान एकादशी

देखे आजु अनोखे दानी॥ ध्रु०॥ जाचक पनमें इती ढिठाई लाल कौन यह बानी॥ १॥ रार करत के गोरस माँगत सो कछु बात नजानी॥ २॥ हरीचन्द कुल दीपक ढोटा कोन रीति यह ठानी॥ ३॥

नित्य

टोड़ी॥ देखो जू नागर नट ठाढ़ो यमुना के तट पर मग कोउ चलन न पावै। काहू को हरत चीर काहू को गिरावे नीर काहू की ईंडुरी डुरावे॥ श्याम बरन तन पीयरा टिपारो सोभा कहि नहिं आवे। हरीचन्द हँसि हँसि नैन नचावत तन मन सबहि चोरावे॥ १॥

मकर संक्राति का और संक्रान्ति के दिन गायबे को पद

राग यथारुचि। दुतिय रूप भानु छटी तजु मान। करत चतुर्थ सदा सो तिन हिय रुटि पंचमी सुजान। तो सम सातीं नाय और कोउ नव मन न

वम तू बाल। तुव बिनु आठ वेदना पावत व्याकुल पिय नन्दलाल। दसम केतु पीड़त पिय कों अति निज दुख अगिनि बढ़ाय। करु अभिसेक अमृत एका दश कुच पिय के हिय लाय। द्वादश बिनु जल तिमि हरि तुव बिन लगतनि प्रथम न नेक। हरीचन्द ह्वै त्रतिय पिया संग करु संक्रमन बिवेक ॥ १॥

नित्य

यथा रुचि॥ दोउ मिलि पौढ़े सुखसों सेज। करत भावती रसकी बतियों बाढ़े मदन मजेज। बतियन हीं कछु अन रस ह्वै गयो प्रिया रही करि मान। बोलत नहिं कछु मौन ह्वै रही भौंह युगुल धनु तान॥ १॥

दिपति दिव्य दीपा वली आजु दिपति दिव्य दीपावली। मनु तम नास करन को प्रगटी कश्यप सुत बंश वली। मनु ब्रज मण्डल कुल चन्द्रमा तहँ तारन की मण्डली। जीतन कों मनु राहु सेन का अति सुबन किरनावली। बिगत भई सब रैनि कालिमा शोभा लागति है भली। हरीचन्द मनु रतन रासिकी उज्ज्वल जोति जुगावली॥ १॥

व्याहुला

यथारुचि।। दोउ जन गाँठि जोरि बैठारे। बिहंसत दोउ मुख देखि परस्पर चितवत होत सुखारे। दूलह दुलहिन को अनन्द लखि बाढ्यो अनंद अपार॥ हरीचन्द को पकरि नचावत गारि देत ब्रजनार॥ १॥

असाढ़

यथारुचि॥ देखु सखि चन्दा उदय भयो। कबहूं प्रगट लखात कबहुं बदरी की ओट भयो। करत प्रकाश कबहुं कुंजन में कबहुं छिपि जाय। मनु प्यारी मुखचन्द देखि कै घूंघट करत लजाय। अहो अलौकिक यह वस्तु शोभा कछु बरनी नहिं जात। हरीचन्द हरि सों मिलिबे कों मन मेरो ललसात॥ १॥

ग्रीष्म ऋतु

यथा रुचि॥ दोउ मिलि बिहरत यमुना तीर में करि कर के जल यंत्र।

चलावत भीजि रही लट नीर में ॥ इत उत नरत सखी जन मोहन मनहुं कमल जल भीर में । छींट उड़ावत हंसत हंसावत बोलनि मनु पिक कोर की ॥ सांवरे अंग गोर तन सोहत लपटनि भीजे चीर की । हरीचन्द लखि तन मन वारत छबि राधा जल नीर की ॥२॥

हिंडोरा

परज ॥ दोउ मिलि आजु हिंडोले झूलैं । कञ्चन खम्भ फूल सों बांधे सोभित सुभग कालिंदी कूलैं । फुलवत चहुं दिसि नवल नागरी शोभा कोरति हू नहिं तूलैं । गावत हंसत हंसाइ रिझावत पिय छबि लखि मनहीं मन फूलैं । चलत चपल दृग कोर परस पर भेटत कठिन मदन की मूलैं । हरीचन्द छबि रासि पियापिय दरसत ही जिय दुख उन मूलैं ॥१॥

बसन्त

देखो कुंज बिहारी प्यारी मूरति सन्त बसन्त ॥ जोबन झालरि लोने सोहत अंग अंग छबि उलहन्त ॥१॥ कोकिल सम बोलनि मधु कर को गूंजनि नूपुर नाद । नव पल्लव सम अधर मनोहर अधरासव मधु स्वाद ॥ फूले फूल विविध बागन में पहिरे सारी सोय । हरीचन्द भागन ते पाई रूप रासि तिय सोय ॥२॥

नित्य

यथारुचि ॥ नटवर रूप निहार सखीरी नट वर रूप निहार । मोहन लगि फिरत जाके हित कुलकी लाज बिसार । ललित त्रिभंग काछनी काछे अमल कमल से नैन ॥ कर लय कमल फिरावत गावत मोहन कोटिक मैन । जग उपहास सहे बहु भांति न जा दरसन के हेत । सो हरि नीके नैननि भरिके काहे देखिन लेत । तुमरी प्रीति अली किंछ सजनी लखिन परै कछु ख्याल । हरीचन्द धनि धनि तुम दोऊ राधा अरु गोपाल ॥१॥

बिरह

न जानी ऐसी हरि करी हैं ॥ हमरे हू छिजन के है हैं स्यान जिय धरि हैं

धु०॥ होत सामनो जिनि हँसि चितवत भाव अनेक कियो ॥ तिन अब मिल तहि सकुचि इते सों मुख हू फेरि लियो ॥१॥ मान्यो तिन्हें काम नहिं हमसों तासों निठुर भये । हरीचन्द ब्रज नाथ नाम की लाजहि क्यों मिटये ॥२॥

नित्य

अथारुचि॥ नागरी रूप ललासी सोहै । कमल सो वदन पल्लव से कर पद देखत ही मन मोहै ॥१॥ अलसी कुसुम सी बनी नासिका जलज-पत्र से नैन । बिम्ब से अधर कुन्द हन्ना वलि मदन बान सी सेन ॥२॥ गाल गुलाब कान झुमका मनु करन फूल के फूल । बेनी मनो फूल-की माला लखिके मन रह्यो भूल । ३॥ बाहु सुढार मृनाल नाल सम फूल सरिस सब अंग । फूलन ओट लगे हैं द्वै फल बाढ़त देखि अनंग ॥४॥ जानु बनी रम्भा की खम्भा शोभा होत अपार । गूलरि फूल सरिस कटि राजत कबिजन लेहु बिचार ॥५॥ नारंगी सी मढ़ी राजत पद तल मनहु प्रवाल । और आभरन बिबिधि फूल बहु कर पहुँची उर माल ॥६॥ चमेसी देह दमक दव नासी चमक चमेली रंग । मालति महक लपट अति आवत कोमल सब अंग अंग ॥७॥ रसिक शिरोमनि नन्दलाल सोइ भँवर भए हैं आइ । देखि देखि छबि राधा जूकी हरीचन्द बलि जाइ ॥८॥

नित्य

तथा॥ नाथ तुम प्रीति निबाहत सांची । करत इकंगी नेह जननसों यह उलटी गति खांची । जेहि अपनायो तेहि न तज्यो फिरि अहो कठिन यह नेम । जेहि सकरत छोड़त नहिं ताको परम निबाहत प्रेम । सो-भूलें पै तुम नहिं भूलत सदा सँवारत काज ॥ हरीचन्द कों राखत हौं बलि बाँह गहे की लाज ॥१॥

दिवारी

तथा॥ नेकु चल पियपैं बेगहि प्यारी । देखु करी तेरे हित कैसी मोहन

बानु तयारी। पड़े पाँवड़े सब मखमल के दल गुलाब रुचिकारी॥ छिरक्यो नीर गुलाब अतर मृग मद चन्दन घन सारी। परदे परे झालरें झमकैं नैन बितान सुतारी। फरश गलीचन को अति रंजन कोमल बहु रंग डारी। धरे साज ढिग अतर पान मधु फूल माल जल झारी। लगी मिठाई रासि दुहूं दिसि दीपक धरे कतारी। बिछी पलंग पथ फेनु मेनु सम सेस भरयो रुचिकारी। पास साज आसन के सोहन कहुं तन रंज सँवारी। ठौर ठौर आरसी लगाई दूनी दुति करि डारी॥ प्रान खूंटिनि हारा बलि माला फूल बसन लै धारी। धति आले सुगंध सों पूरे धान मिठाई डारी। जहँ तहँ अदब किये सब सखियाँ ठाढ़ी साज सँवारी। मुरछल चँवर रुमाल अड़ानी पीक दान लै बारी॥ चौंकि चौंकि पिय उठत बिना तुव आगम संक बनवारी। हरीचन्द प्रीतम गर लागि कै कर त्योहार दिवारी॥ २॥

बधाई

बिहाग॥ नाचति बरसाने की नारी। जिनके घर प्रगटी श्री राधा मोहन प्रान पियारी। नाचत शिव सनकादि मुनीश्वर नारद आदि व्रत धारी। नाचत वेद पुरान रूप धरि डारत तन मन वारी। अति आनन्द बाढ्यो बरसाने प्रगटी श्री ब्रषभान कुमारी। हरीचन्द आनन्दित अति महा होत निरखि बलिहारी॥ १॥

बधाई

तथा॥ नन्द बधाई बाँटत ठाढ़े। भई सुता बाबा भानु राय के प्रेम पुलक तन बाढ़े। काहू को सोना काहू को रूपा काहू को मनिगन दीनो जिन जो मांग्यो तिन सो पायो कहो सबनि को कीनो। काहु को धेनु बसन काहू को दियो सबनि मन भायो। आनँद भयो कहत नहिं आवै हरीचन्द यश गायो॥ १॥

तथा॥ नागरी मंगल रूप निधान। जब ते प्रगट भई बरसाने छाये

आनंद महान। दिन दिन सुख उमड़त घरघर में छिन छिन होत कल्यान। हरीचन्द मोहन की प्यारी राधा परम सुजान॥ १॥

जल बिहार

नाव चढ़ि दोऊ इत उत डोलें। छिरकत कर सों जल अंज्जित करि गावत हँसत कलोलें। करन धार ललिता अति सुंदर सखि सब खेवत नावें। नाव हलनि मैं पिया बाहु मैं प्यारी डरि लपटावें। जेहि दिशि करि परिहास झुकावहिं सब ही मिलि जल जाने। तेहि दिशि युगुल सिमिटि झुकि परहीं सो छबि कौन बखाने। ललिता कहत दाव अब मेरी तू मों हाथन प्यारी। मान करन की सौंह खाइ तौ हम पहुँचावें भारी। हँसत हँसावत छींट उड़ावत बिहरत दोऊ सोहें। हरीचन्द यमुना जल फूले जलज सरिस मन मोहें॥ २॥

बसन्त ऋतु में जनम बधाई

नव बसन्त को आगम सजनी हरि को जन्म सुहायो। गावत कोकिल कीर मोरसी युवती बजत बधायो। बिबिध दान लहि याचक जन से फलित कुसुम बहु फूले गुन गावत धावत बन्दीजन से भंवरे बहु भूले। उड़त गुलाल अबीर रंग सी दधि काँदो झर लाई। नाचत गारी देत निलजसे गावत ताल बनाई। टेसू फूलन मिस बृन्दाबन प्रगट्यो जिय अनुरागै। केशर सिंचित सम सरसों बन नैन सुखद अति लागै। गोप पाग पहिरे सम शोभित गेंदा तरु इक रासी। बौरे आम सरिस डोलत आनन्द बौरे ब्रज बासी। बंस बेलि लहरानी नन्द जू की अति सुख झालरि लाई। तरुन तमाल श्याम घन उपजे हरीचन्द सुखदाई॥

बधाई

यथारुचि॥ प्रगटे रसिक जनन के सर बस॥ ध्रु०॥ यसुमति उदर अलौकिक बारिधि श्याम कला निधि निधि रस॥ १॥ पसरित चंद्र कला सो पूरब उज्ज्वल बिमल बिसद जस॥ २॥ हरीचन्द ब्रज बधू चकोरी सह

जहिं कीनी निज बस ॥३॥ बधाई

तथा ॥ प्रगटे मानन हूं ते प्यारे ॥ ध्रु० ॥ नन्द भवन आनन्द कन्द निधि यशुमति मात दुलारे ॥ १ ॥ आजु भयो सो हो मानन्द भुव फले मनोरथ मोर ॥ २ ॥ हरीचन्द गोपिन के सरबस ब्रज के रखवारे ॥ ३ ॥

बिरहा

तथा ॥ पिय बिनु बीत गये बहु मास ॥ ध्रु० ॥ दिन दिन मदन सतावत अतिही बाढ़त बिरह हरास ॥ छिन छिन छीजत कनक छबीली छुटत ५ छांड़ि अवास ॥ बेगि सुधा करि आवहु माधव हरीचन्द गुन रास ॥ २ ॥

होली

काफी ॥ पिया मन मोहन के संग राधा खेलत फाग ॥ ध्रु० ॥ दोउ दिशि उड़त गुलाल अरगजा दोउन उर अनुराग ॥ रंग रेल निझोरी खेलन में होत दृगन की लाग ॥ हरीचन्द लखि सो सुख शोभा अधुत सराहत भाग ॥ २ ॥

दूती

यथारुचि ॥ प्यारी मोसों कौन दुराव ॥ ध्रु० ॥ कहि किन अरी मन भनी सी क्यों काहे की जिय चाव ॥ काहे को अनुमन सो दुख पोषत ५ बारी नेक बताव ॥ हरीचन्द क्यों कह तन मोसों प्यारी लाइ मिलाव ॥ २ ॥

नित्य बिहार

बिहाग चौताला ॥ प्यारी के कुंज पिय प्यारो आवत हारहि धाय भुजन भरि लीनो ॥ उमगि मिले छतियन सों लपटे दोउ ललन न मानत ५ क्यो रंग भीनो ॥ जित की तित रही खरी सखियां सब छूटत भुजन अलिंगन दीनो ॥ हरीचन्द जब बहुत समझाये तब क्यों हूं गौन महलन में ५ कीनो ॥ २ ॥

बिहाग

तथा ॥ प्यारी लाजन सकुची जात ॥ ध्रु० ॥ ज्यों ज्यों रति अलि खिंचत सुहें आरसि मांह लखात ॥ कहत लाख तहि दूर साखि ये बल करि कार खत गात ॥ हरीचन्द रस बढ़त अधिक अलि ज्यों ज्यों तीपत जात ॥ २ ॥

तथा

तथा ॥ प्यारी छबि की रास बनी ॥ जाहि बिलोक निमेखन लागत श्री वृषभानु जनी ॥ ध्रु० ॥ नन्द मदन सों बाहु मिथुन करि ठाढ़ी यमुना तीर । कारक होत सोतिल की छबि लखि सिंह कमर शुभ बीर ॥ १ ॥ कीरति की कन्या जग धन्या अन्या तुला न वाकी । वृश्चिक सीक सकत मोहन हित भौंह छबीली जाकी ॥ २ ॥ धन धन रूप देखि जेहि धनि छिन मकरध्वज तिय लाजै । युग कुच कुंभ बढ़ावत शोभा मीन नयन लखि भाजै ॥ ३ ॥ बेस संध्य संक्रौन समय तन जाके बसत सदाई । हरीचन्द मोहन बड़ भागी जिन संक्रम करि पाई ॥ ४ ॥

तथा ॥ पौढ़े दोउ रतनिके रस भीने ॥ नींद न लेत अरुफि रहे दोऊ केलि कथा चित दीने । नैसेई सीतल सेज बिछाई सखी बिजन करि लीने । हरीचन्द आलस भरि सोये कछुक ओढ़ि पट भीने ॥ १ ॥

संक्रान्ति

यथारुचि ॥ पियारे इतही भकर मनावहु । लाली खिचरी सुखद अरोगो हम कहँ सुख उपजावहु । बड़ो परब है आजु श्याम घन कहूँ न चित्त चलावहु । हरीचन्द मिलि देहु महा सुख मेरी लगन पुजावहु ॥ १ ॥

तथा

तथा ॥ प्यारे जान न देहों आज । सो दिन मकर कयो नहिं छांड़ों प्रानानाथ ब्रजराज । मीन मेख बिनु बात करत तुम कहूँ मिथुन ललचाने । धन धन पिय तुम तुल नहिं दूजो सब के घटन समाने । कर कत हिय बीछी सी बातें सौं तिन संग जो कीनी । तासों राखों लाय हीय अब करि करि अधिक अधीनी । सौ वृषभानु राय की कन्या जो अब तुमहिं न छांड़ों । बड़ो परब यह पुन्य उदय मोहिं मिलि तुम सों रंग माड़ों । दासिन होन देउं नहिं कबहूँ करौ लाख बनु राई । हरीचन्द मेरे संग बिराजो सब ब्रज राई ॥ १ ॥

तथा

तथा ॥ पिया सों खिचरी क्यों न राखत । कहा मान करि बैठि रही है कछु-
क बचन नहिं भाषत । यह संक्रम खिचरी को आली मानहिं दूरि न
राखत । हरीचन्द पिय सों खिचरी सी मिलि क्यौं रस नहिं चाखत ॥१॥

तथा

तथा ॥ प्यारी जू के तिल पर हौं बलिहारी । सब सखियन की दीठि
डिठौना रति रति पति मद हारी । श्याम सरूप बसत बन सूछम सोइ
हर शावत प्यारी । हरीचन्द हरि पीर मिटावन एक यहे गुनकारी ॥१॥

दीनता

यथारुचि ॥ पतित उधारन नाम सही । श्री बल्लभ बिट्ठल बिन दूजो
नेह निबाहन हार नहीं । साधन ध्यान कर मन सम्पर भूलि बुद्धि
क्यौं जाति बही । कोऊ कछू काम नहिं ऐहैं क्यौं डोलत बर नहीं म-
ही । दीनन को हित नाहिन दूजो यहै बात कारि सपथ कही । हरीच-
न्द से अधम उदारन और यही इक यही यही ॥१॥

परम्परा

छप्पै ॥ प्रथम नौमि गोपी पति पद पंकज अरुनारे । पुनि शिव ना-
रद ब्यास बहुरि सुक मुनि मत धारे । बिष्णु स्वामि पुनि बन्दि बिल्व
मंगल पद बंदत । श्री बल्लभ चरनारबिन्द युग नौमि अनन्दत । श्री
बिट्ठल तिनकी दोऊ बिधि संतति जो अब लौं प्रगट । तेहि बन्दत
नित हरिचन्द यह परम्परा मत की उघट ॥१॥

जाड़े में सैन समय गाइबे को पद

प्यारी को खोजत है पिय प्यारो ॥ मिलि रहि दीपावलि में मिलि मि-
लि फैलो बदन उजारो । नूपुर धुनि सुनि जानि नवेली गहि ल्यायो
पिय न्यारो । हरीचन्द गर लाइ मनायो दीप दान त्यौहारो ॥१॥

बधाई ॥ प्रगटी सुन्दर ताकी खान । श्री बृषभान राय के मंदिर राधा ।

परम सुजान। गावत गोपी गीत बधाई बाजत तूर निसान। अम्बर दे-
व फूल बरसावत चढ़ि चढ़ि दिव्य बिमान। जाचक भये अजाचक-
सिगरे पाइस विधि सनमान। हरीचन्द ब्रज चन्द पिया की जोरी अ-
ति सुखदान॥१॥

धुरपद

भैरों॥ प्रात काल ब्रज बाल पनियां भरन चलीं गोरे गोरे मुख सोहै
कसुंभी को चदरा। ताही समय घन आए घेरि घेरि नभ छाए दा-
मिनि दमकि देखि होत जिय कदरा। बोलत चातिक मोर शीतल
पवन झकोर यमुना उमड़ि चलीं बरसत अदरा। हरीचन्द बलिहारी
उव बैठी गिरधारी। शोभा तो निहारो चलि कैसे छाए बादरा॥२॥

बधाई

राग बसन्त॥ प्रगटे हरिजू आनद कन्न। मनु आई भुव पर ऋतु-
बसन्त। सब फूले गोपी ग्वाल बाल। मनु बौरि रहे बन में रसाल। सब
ग्वाल धरें केसरी पाग। मनु डारन पै गेंदा सुभाग। फैली चहुं दिशि
हरदी सुरंग। सरसों की खेत फूलन के संग। सब के मन में अतिही-
हुलास। मनु फूलि रहे सुन्दर पलास। देखत सब देव चढ़े बिमान-
मनु उड़त बिबिध पंछी सुजान। नट नाचत गावत करत ख्याल। मनु
नाचि रहे बन में मराल। गावत मागध बन्दी प्रवीन॥ मनु बोलि र-
ही कोकिल नवीन। पहिरे नर नारी बसन हार॥ मनु नए पत्र फल फू-
लबार सो सुख लूटत हरिचन्द दास। मनु मत्त भंवर पायो सुवास॥१॥

ग्रीष्म ऋतु में राग वृन्दावनी

सारंग॥ प्यारी मति डोलै ऐसी धूप में। तेरे मैं तो बारी गई री॥ जा-
के हेतु फिरत तू बनबन सो तोहि आतुहि बोलै। तेरे मैं चलि किन
कुंज उसीर महल तू करु पिय संग कलोलै। हरीचन्द मिलि ठी-
क दुपहरी सुरति अमृत रस घोलै॥ तेरे मैं॥१॥

रथयात्रा

सारंग ॥ पिय मेरे अंकरम सुरथ बिराजो । सुरंग चूनरी झालरि झूमन मोती लर बहु साजो ॥ किंकिनि कलहु घंटिका बाजनि चंवर चिकुर चल सोहै । अंचर बिजन चलनि मन मोहन सब ही बिधि जिय मोहै । कोक कला कल चक्र चपल बर तुरंग उछाह लगाये । नेह डोरबल सेज भूमि पै करि मनुहार चलाये । अधर सुधा मधु भेंट करोंगी स्वेद कुसुम बरसाई । हरीचन्द बलि वेगि पधारो जान सिरोमणि राई ॥

नित्य

राग खट ॥ प्रात समय उठ लहिं श्री बल्लभ . यह मंगल मय लीजे नाम । कोटि बिघन बरन पंचानन सब बिधि समरथ पूरन काम ॥ अध नाशन करुणा निधि दीनानाथ पतित पावन सुख धाम ॥ सुमिरन मात्र हरन जन आरति मोहन कोटि कोटि रति काम ॥ रहिये इनकी शरण सदा बलि बिकि जैये इन कर बिनु दाम । हरीचन्द निरभय इन चरननि छत्र छांह कीजे बिश्राम ॥ १ ॥

मलार

पिय बिन बरसत आयो पानी । चपला चमकि चमकि डरपावत मोहि अकेली जानी । कोयल कूकि सुनत जिय फाटत यह बरसा दुखदानी । हरीचन्द पिय श्याम सुंदर बिनु बिरहिन भई है दिवानी ॥ १ ॥

गरमी में सेहरे को पद

राग यथारुचि । फूल्यो सो दूलह आजु फूलही को साजे साज फूलसी दुलही पाइ फूल्यो फूल्यो डोले । केशरी बन्यो है बागो मोतिन की कोर लागो फूल झरै जब वह मुख बोले । फूल को सेहरो शीश फूलन की माल कराठ फूले फूले नैन दोऊ लगे अनमोले । हरीचन्द बलिहारी निज कर गिरि धारी कलीसी दुलहिया को घूंघट खोले ॥ १ ॥

तथा

तथा॥ फूलहु को कंगना नहिं छूटत कैसे हो बल वीर जू। जानि परी सब आजु तुम्हारी नामहिं के रणधीर जू॥१॥ दूध पिवायो यशुदा मैया जादिन कों सों आयो। चोरि चोरि कै माखन खायो सो बल कहां गँवायो॥२॥ तारी दै दै हंसी सखी सब आजु परी मोहिं जानी। सुनि के तिनकी बात दुलहिया घूंघट में मुसक्यानी॥३॥ कोटि यतन कोऊ करि हारो लगी लगन नहिं टूटै। हरीचन्द यह प्रेम डोरना सो कैसे करि छूटै॥४॥

तथा॥ फूल को सिंगार करत अपने हाथ प्यारो। फूलनि की कलियन को आभरन सँवारो॥१॥ पाटी पारि अपुनो हाथ वेनि गुथि बनावै॥ शीश फूल करन फूल लै लै पहिरावै॥२॥ कंचुकी पहिरावत मैं चप लई कछु कीनी। प्यारी मुसकाइ आँखि नीची करि लीन्ही॥३॥ किंकिनि पहिराइ झूवा लहंगा पहिरायो। देखि देखि मुदित होत प्यारो मन भायो॥४॥ पायल पहिरावन कों चित्त जबै कीनो। प्राण प्यारी खींचि चरण तब छिपाइ लीनो॥५॥ प्यारी को संकोच जानि प्यारे इमि भाख्यो। मान समय कोटि वार इनहिं शीश राख्यो॥६॥ पायल पग बाँधि फूल माला पहिनाई। अपुने कर नन्द लाल आरसी दिखाई॥७॥ प्यारी तब धाइ पिया कराठहि लपटाई॥ हरीचन्द बार बार लखि के बलि जाई॥८॥

मलार

फिरि तलपे गे पापी प्राण फिरि आई बदरी कारी। बिन पिय बचौं फेर याही दुख देखन के हित नारी॥ अति व्याकुल तलफत कोउ नाहिं न धीर दिवावन हारी। देखि दशा रोवत द्रुम वेली धीर सकत नहिं धारी। कोकिल कूक सुनत हिय फाटत क्यों जीवै सुकुमारी॥ हरीचन्द बिन को समुझै है कहि कहि प्राण पियारी॥१॥

रास के पद

फिरि लीजे वह तान अहो पिय फिरि लीजे वह तान। निनि धध पप मम

संग सिरिस्यामा मोहन चतुर सुजान। उदित चन्द निरमल नभ मण्डल थकि गये इव बिमान। क्वनित किंकिनी नूपुर बाजत झन झन शब्द महान। मोहे शिव ब्रह्मा दिक वह निसि नाचत लखि भगवान॥ हरी-चन्द राधा मुख निरखत छूट्यौ सुरति समान॥

खंडिता

रागपञ्चाकलि॥ बिहारी जी सूझे रह्या छे थारा नैणा॥ध्रु०॥ कौन खि-लार संग निशि जागया कहा करो छो घोरा॥१॥ कौन को यह लाया छो प्यारे रंगन रंग्यो उपरैना॥२॥ हरीचन्द थें जन मरा कपटी कौन सुने प्यारे बैना॥३॥

बिहार

बिहाग॥ बैठे दोउ अपने सुख मिलि॥ध्रु०॥ ऊंचे महलन के चौवारे शरद चाँदनी चहुँ दिशि रही खिलि॥ प्रिया करत कछु विनय लाल सु-नि सहिन सकत जिय बिवश जाति हिलि॥ कहि बश बल हरिचन्द अंश पर ढुरत अधर में अधर रहत गिलि॥१॥

अगहन में राजभोग समय

सारँग॥ बारी अति मेरो लाल सोई उठत प्रात काल कहा तोर कैसो चोर-झूठही अंगराती। चोरोलाइ छिनारी आवत तुम ग्वालिनी मद माती। इहि मिसि नित उठि देखन आवत अपनो मन क्यों नहिं समुझावत यौ-वन के रस चूर फिरत तुम घर घर में इतराती। हरीचन्द बरनि जाइ लाल-हि मति दोष लाहु कहत बाल क्यौं बनाइ कांपैं इठलाती॥१॥

बिहार

बैठे लाल नवल निकुंजन माहीं॥ अति रस भरे दोउ अंग जोरि के हि-लि मिलि दे गल बाहीं। तैसे श्री गिरि राज शिलापै फूले कुसुम अनेक भाँती॥ तैसी ये यमुना अति शोभित फूलि रही कमलन की पाँती। तैसेई भँवर गुंजार करत हैं तैसोई त्रिविध बयार। तैसेई झरना झरत अनेक वृन्दावन तरु डार। कर लै कमल फिरावत दोऊ उर फूलन की माल।

हरीचन्द बलि बलि यह छबि लखि के राधा और गोपाल ॥ १॥

माहात्म

सारंग॥ बेणु धर चक्र धर शंख धर पद्म धर गदाधर शृंगधर बेत्र धारी। मुकुट धर क्रीट धर पीत पट कटिनि धर कण्ठ कौस्तुभ धरन दुःखहारी। मत्स्यको रूप धरि बेद प्रगटित करन कच्छ को रूप जल मथन कारी। दलन हिरनाक्ष बाराहको रूप धरि दन्त के अग्र धर पृथिव भारी। रूप नरसिंह धर भक्त रक्षा करन हिरण्य कश्यप उदर नख बिदारी। रूप बावन धरन छलन बलिराज को परशु धर रूप छत्री संहारी। रामको रूप धर नाश रावण करन धनुष धर तीर धर जित सुरारी। मुसल धर हल धरन नील पट सुभग धर उलटि करषन करन यमुन बारी। बुद्ध को रूप धर बेद निन्दा करन रूप धर कल्कि कलियुग संघारी। जयति दश रूप धर छद्म कमलानाथ अतिहि अज्ञान लीला बिहारी। गोप धर गोपि धर जयति गिरिराज धर राधिका बाहु पर बाहु धारी। भक्त धर संत धर सोई हरिचन्द धर बल्लभाधीश द्विज भेष कारी॥१॥

बधाई

सारंग॥ ब्रजजन कांवर जोरि जोरि। आये मन भाये ले दधि घृत निज निज ग्रह ते दोरि दोरि॥ गोपी आईं गीतनि गावत पाईं परत मुरलोरि लोरि। करत निछावरि देखि प्रिया मुखतन के भूषण छोरि छोरि। दधि कांदो माच्यो आंगन में देत माठ सब फोरि फोरि। लूटत झपटत खानमिठाई बारन छिन में कोरि कोरि। गिनत न कोउ काहू को कछु पट भूषण दे तोरि तोरि॥ हरीचन्द मुखकहत न आवे आनंद बाढ़्यो खोरि खोरि॥१॥

तथा

तथा॥ ब्रजजन मनही आनन्द भयो। श्री ब्रषभान भौन के भीतर सब सुख आन नयो। गांव गांव ते टीको आयो भीतर भवन लयो। हरीचन्द आनन्द भयो अति दुख बहि दूरिगयो॥१॥

तथा

तथा ॥ ब्रज में रसनिधि प्रगट भई । चन्द्रभान नृप भाग फले ब्रज प्रगटी सुता नई । हरि राधा को प्रेम परम जो सोइ मूरति चितई । कहि हरिचन्द मान लीला रस करि हित भूमि गई ॥ २॥

बिहार

केदारा ॥ बैठे लाल यमुना जू के तट पर । ग्रीष्म ऋतु जान प्रतिसुख मान मान संग सब गोपी चतुर तर । बिजन चँवर दुरत चहुँ दिशि ते शोभित सुभग नवल वर ॥ हरीचन्द चन्द बदन हरि की छबि लखि कोटि काम । वारि गयो एक एक पद नख पर ॥ १॥

तथा

कलिंगड़ा ॥ बीती निशि तिय सोवन दीजे यह ललिता ले बीन बजायो । चौंकि परे दोउ भोर जानि तब रसमसे नैनानि आलस आयो ॥ सीरे जानि हार उर के पिय करि मनुहार लियाहि सुवायो । हरीचन्द संगम सुख शोभा सो कैसे कहि जात सुनायो ॥ २॥

रासकोपद

भैरव ॥ वृन्दावन उज्ज्वल बर यमुना तट नन्दलाल गोपिन संग रहस रच्यो शरद यामिनी । नृत्तत गोपाल लाल संग मैं ब्रज बाल बनी अद्भुत गति लेत कोक कलित कामिनी ॥ लाग डाँट सुर बंधान गावत अचूक तान ततथेइ ततथई थेई गति अभिरामिनी । गोपिन संग श्याम । सुंदर मंडल मधि शोभित अति बिहरत बहु रूप मानो मेघ दामिनी । थाक्यो नभ चन्द देखि रैन गति शिथिल भई लखि हरि गजपति संग गज गामिनि । हरीचन्द शोभा लखि देव मुनि नभ थिर कित मानी हरि साथ सबै ब्रज भामिनी ॥ १॥

बसन्त

बिहरत राधा मोहन बसन्त । मिलि रसिक दोउ कामिनी कन्त ॥ बागे ।

भीजे केशर गुलाल। भये बसन बरन सित पीत लाल॥ मिलि महकन्त सुन्दर अंग सुबास॥ फूलन मालन संग आस पास॥ प्रेमी सब दोउ किये पान। रंग रंगे मत्त अतिही सुजान॥ बिहबल रस में मद नहिं थकाय। बिहरत निशंक लाजहि लजाइ॥ लखि युगुल अलौकिक छबिनिधान हरिचन्द निछावरि करत प्रान॥ २॥

धमार

काफी॥ ऐरी बिरह बढ़ावन आयो फागुन मासरी। हौं कैसी अब करूं कठिन परी गांसरी। एसखि और ऋतु ह्वै गयो बयारहु औररी। और फूले फूल और बन ठौररी। और मन ह्वै गयो और तन पीय को। और चटपटी लगी काम की जीय को॥ बन के फूलन देखि होत जिय सूलरी। बिनु पिय मेरे कौन बिरह की हूलरी। एसखि बिसस्यो भोजन पान खान सुख चैनरी। बड़ी खुमारी चढ़ी रहत दिन रैनरी। रजनी नींद न आवे जिय अकुलायरी। चौंकि चौंकि हौं परौं चित्त घबरायरी। अटा अटा चढ़ि डोलौं पिय के हेतरी॥ काहू नहिं मेरो लाल दिखाई देतरी। सपने में जो कहुं पिय रूप देखातरी। तो यह बैरिनि नींद चौंकि तजि जातरी। जो कहुं बाजन बाजै गोकुल गैलरी। तौ उठि धाऊं आवत जानूं छैलरी। या घरमें सखि कोऊ नहिं लागत आगरी। जाके डर हौं खेलन जात न फागरी। बैरिन मेरी सास जिठानी हैं सबै। देखन देत न मोहन को मुखरी अबै। जौ लाल घर ऐहै कौने काम री॥ जौ नहिं देखन देत पिया घन स्यामरी। मोहिं अकेली निरबल अबला जानरी॥ तानि कान लौं खैंच्यो मदन कमानरी। कहा करौं कहा जाउं बताओ मोहिरी। कहो किन और उपाय सपथ है तोहिरी। यदपि कलंकिनि कहत सबै ब्रज लोगरी। तऊ मिटत नहिं मुख लखिबे को सोगरी। रोअन हूं नहिं देत प्रगट मोहिं हायरी। कौं कैसो दुख मिटै बताव उपायरी। फिरि डफ बाजन सुनि सखि आये प्रभामरी। झारी खेलत प्राननाथ सुखधामरी॥ अब कैसे रहि जाय मिलौंगी

धाइ के। लाज छोड़ि जग नेह निशान बजाइ कै। हरीचन्द उहि देरी भामि-नि प्रीति सों। वर जेहू नहिं रही मिली मन मीत सों॥

हिंडोला

गौरी॥ वृषभान कुमारी लाड़िली प्यारी झूलत हैं संकेत। संग सुंदर स-खी सोहावनी जिनकी नो हरि सों हेत हो॥१॥ सुन्दर साज सिंगार किये सब पहिरे विविध रंग चीर। हिलि मिलि झूलत बढ़ि लाड़िली दोन वरस यमुना तीर हो॥२॥ सबै सुहाई नवल बधू मिलि गावत गौरी राग॥ हरी-चन्द मुख कोयन बरनत बाढ़यो सलिल सोहाग हो॥

वामन द्वादशी की बधाई

सारंग॥ बलि कीनी सो कौन करै। सब बस हरिहि समर्पि प्रेम सों जगत सीख हित को निदरै। द्विज मन मान दान व्रत पालन दृढ़ व्रत को हठि नाहिं टरै। आत्मसमर्पण दास्य भाव निज करि आग्रह को जो प्रभ-रै॥ हरिजग स्वामि प्रगटि दिखरायो जामें शंका सकल जरै। प्रभु प-ति कुल गुरुहु निज छोड़्यो यह अनन्य मति को चितरै॥ राजहु गयो श्राप गुरु दीने आपु बंधे पै कोन डरै। हरीचन्द दृढ़ता की दुंदुभि जग ब-जाइ इमि कोन तरै॥१॥

तथा

सारंग॥ बेदन में निज महिमा पायन भये त्रिविक्रम आजु मुरारी। सब जग व्यापकता दिखराई सबन प्रत्यक्ष दीन हितकारी॥ और हु एक भेद है यामें जो प्रगट्यो या भेस खरारी। बामन हू बंधु सब सों ऊंचे त्रिभुवन दायक यदपि भिखारी॥ जग दाता विराट वपु की फिरि कोहो महि-म को कहैं विचारी। हरीचन्द छोटे पन हूं में जब सब ही सों बढ़ि बनवारी॥२॥

तथा

तथा॥ बलिहि छलन गये आपु छलाये। मांगत दान दियो अपुनो को बांधि एक छन जनम बंधाये। प्रणत्ता रति हर भगत बछल प्रभु सांच नाम निज करि दिखराये। हरीचन्द सुरकाज करन गये असुर राज घिर करि-

हरि आये ॥२॥ तथा

तथा ॥ बलि की मति पर बलि बलि हारी । सिखयो जगहि समर्पन जिन निज गुरुकी आयसु टारी । हरिसों बढ़ि सुपात्र जग नाहीं बलिसों बढ़िके दाता । भूमि दान सम दान नहीं यह थापी तीनहुं बाता । दृढ़ बिश्वास अचल निज मन हट कबहुं न डिगत डिगाये । याही ते पहरू करि हरि को रहत द्वार बैठाये सेवक स्वामि अनन्य भये मिलि गति नहिं परत लखाई । इन में को बढ़ि को घटि यह किमि हरीचन्द कहि गाई ॥

भोजन के पद

राग सुधारुचि ॥ भोजन करत किशोर किशोरी । कुंज महल में परिगे भरदा सखि ठाढ़ी चहुं ओरी ॥ ललिता लै आई भरि थारी ताती खिचरी कोरी । तामें घृत डास्यो बहुते करि रुचि बाढ़ी नहिं थोरी ॥ हंसत परस्पर खात खवावत बंधे प्रेम की डोरी । हरीचन्द बलि बलि जोरी पर बरनि सके सो कोरी ॥१॥

संक्रान्ति के पद

राग सुधारुचि ॥ भागन पाइयेजू लाल न बैस संधि संक्रौन । त्रियतिथि पाइ व्यापि गइ तन में चलो किन राधा रौन ॥ बाल तरुनाई मिलन सुराय छन अति थोड़े ही बेर । ललिता बनि ज्योतिषी बतावत समय न पैहो फेर । कुंजकुटी तीरथ में चलिके करहु स्वेद स्नान । हरीचन्द अलिया चक को मिलि देहु दोऊ सुख दान ॥१॥

बधाई

तथा ॥ भट इक बात नई सुनि आई । आजु भई कीरति के कन्या बाजत रंग बधाई । नरनारी सब है मिलि आई कीरति घर छबि छाई । अति आनन्द कहत नहिं आवे हरीचन्द बलि जाई ॥१॥

रथ के भाव को पद

मलार ॥ मनोरथ करत द्वार पर ठाढ़ी । करि करि ध्यान श्याम सुंदर को पुलकावलि तन बाढ़ी । ऐहैं री याभारग सों हरि कमल नयन घनश्याम ।

बेनु बजावत कमल फिरावत हँसत गये बन दाल। करि करि बहु पकवान मिठाई भरि भरि राखत थार। अपने हाथन गूंथि बनावत रुचि फूलन के हार। हारे भेर रथ डाढ़ो करि मोको अति सुख देहैं। जो हम रचि रचि के राखे हैं सो प्रभु रुचि सों खैहैं। दै बीड़ा आरती करोंगी बिजन हाथ हुलैहैं। तन मन धन न्यो छावरि करिहैं देखि देखि सुख पैहैं। जो जो कहुं मन बरमन लागे ताहि निवारत काज। भीजत उतरि मेरे घर ऐहैं जेहि सुख को सब साज। सुफल काम सब मेरो है है जो कछु चित्त बिचार्यो। ऐसे ग्वालिन करत मनोरथ रथ को दूरि निहार्यो। हरि आये बादरहू आये बरख न लाग्यो पानी। ताके घर प्रभु उतरि पधारे भीजत आपुहि जानी। अति आनन्द भयो ताके चित मिलि प्रभु अति सुख दीनो। हरीचन्द प्रभु अन्तरयामी सुफल मनोरथ कीनो ॥१॥

संक्रान्ति

मकर संक्रोन सखी सुखदाई। मकर कुण्डल सों मकर बिलोचनि क्यौं न मिलत तू धाई। मकर केतु को भय नहिं मानत घर में रही छिपाई। केतुव बिनु भे मकर बिना जल आकुल सुकरन पाई। मान मान तजु मान धरम कार कर धरि लै गर लाई। हरीचन्द तजु मकर राधिके रहु त्यौहार मनाई ॥२॥

स्फुट

सुघराई॥ मन तुहि कौन यतन बस कीजै। काहू सों जिय भरत न तेरो कहां कहां चित दीजै। ज्ञान कर्म कुल नेम धर्म सों होतन तोहि संतोष। घर घर भटकट डोलत धायो किये अनेक भरोस। कामादिक नित काम तिहारे सों नहिं क्यों हू मानै। सहस सहस नित करत मनोरथ ताहि कौन विधि जानै। कछु पूरो नहिं परत यतन नित तौहू चाहत दावे। हरीचन्द क्यों छाड़ि न सब को पिय पद में चित लावै ॥२॥

बधाई

कान्हरा॥ महारानी तिहारो घर सुबस बसो। आजु सुफल ब्रज बास

भयो सब घर घर अति आनन्द रसो। कोउ गावत कोउ करत कुलाहल माखन को कोउ लेत गसो। श्री राधा के प्रगट भये ते यादरसानो सुख बरसो। देत अशीश सदा चिरजीवो मोहन को संग ले बिलसो। हरीचन्द आनन्द अति बढ़्यो सब जिय को दुख दरद नसो ॥२॥

बाललीला

बिलावल॥ मणिमय आंगन प्यारी खेले। किलकि किलकि हुलसत मनहीं मन गहि अंगुरी मुख मेले। बड़ भागनि कीरति श्री मैया गोहन लागी डोले। कबहुं कले झुन झुना बजावति मीठी बतियनि बोले। अष्ट सिद्धि नव निधि जाकी दासी सो ब्रज शिशु वपुधारी। जोरी अविचल सदा विराजो हरीचन्द बलिहारी॥२॥

तथा

आसावरी॥ मेरा लाड़िलो गोपाल माई सांवरो सलोना। जाके हित लाई मैं सुरंग खिलौना। छाड़ो हठ बारने हों वार वार जाऊं मुख देखे लालन को नैनन सिराऊं। ब्रज कोउ जियारो मेरो छोटो सो लाला। मानै मेरो ई कह्यो ऐसो शुभ चाला। तुमरे हित खोजूं लाल दुलही इक छोटी। मिलि खेले लालन के रहे संग जोटी। माखन मिसिरी हों दैहों खावो मेरे प्यारे। छाड़ो मचलाई लाल नन्द के दुलारे। हौंतो संग लागी फिरों पलकहू न त्यागों। पालने झुलाऊं गीत गाऊं अनुरागों। होतो माता हूं तेरी मेरी बात मानो। हरीचन्द बलिहारी आर नाहिं ठानो॥३॥

रथयात्रा

सारंग॥ मेरे मनरथ चढ़ि पिय तुम आवो। चारु चक्र बुधि बल छल साहस लगन की डोर लगावो। चपल तुरंग मनोरथ बहु बिधि निर भय छत्र छवावो। हरीचन्द गर लागि हमारे प्रेम धुजा फहरावो॥२॥

बधाई

यथारुचि॥ मंगल सब ब्रजबासी लोग। मंगल मय हरि जिन घर प्रगटे

मिटे अमंगल भवके सोग। मंगल ब्रज बिंद्रावन गोकुल मंगल माखन दधि घृत भोग। हरीचन्द बल्लभ पद मंगल गोपी कुल संयोग॥२॥

मान कोपद

बिहाग॥ मेरी री मत कोउ होउ बसीठि॥ ध्रु०॥ मैं इन की वे मेरे रहि हैं-सदा हिये में पीठि॥१॥ मैं मानिन वे मनावन हारे मेरी उनकी मिलि दीठि॥२॥ हरीचन्द मिलि हौं मैं उन सों ले मनुहारन नीठि॥३॥

नित्य

यथारुचि॥ मेरेई पौरि रहत ठाढ़ो लरत नटारे नन्द राय जू को ढोटा॥ ध्रु०॥ पाग रही भुव ढरकि छबीली यामें बांध्यो है मंजुल चोटा॥१॥ चितवन हंसि फिरि मोलन हेरत करले बेनु बजावत॥ धरि अधरन दहल्लन छबीलो नाम हमारोइ गावत॥२॥ कर लै कमल फिरावत चहुं दिसि मोलन हाँकृ नटारे॥ हरीचन्द मन हरि ल्ले हमरो हंसि हंसि पाग संवारे॥३॥

तथा

तथा॥ मारग रोकि भयो ठढ़ो जान न देत मोहिं पूछत है तू कोरी॥ ध्रु०॥ कौन गाँव कह नाम तिहारो बड़ी रह: नेक गोरी॥१॥ कित चली जात तू बदन दुराये री मति की भोरी॥२॥ सांझ भई अब कहां जायगी नीकी है यह सांकरी खोरी॥३॥ बहुत यतन करि हारी ग्वालिनि जान दियो नहिं तेहि घर ओरी॥४॥ हरीचन्द मिलि बिहरत दोऊ रैनिनि नन्द कुंवारे श्री वृषभान किशोरी॥५॥ बसंत

महा महोत्सव दिवस पंचमी खेलत लाल बसन्त। पूरन करन मनोरथ जिय के ब्रज नारिन के कंत॥१॥ गोपी गोप जुरे इक ठौरे लेले साज समाज॥ भीर भरी नंद भवन मनोहर शोभा बाढ़ी आज॥२॥ गावहिं बहुविधि भाव बता वहिं प्रगट करहिं अनुराग॥ निरखि निरखि छबि सांवल मुख की सबके मन मधु जाग॥३॥ गारी देहिं अबीर उड़ावहिं केशर छिरकत अंग॥ परसत ही तन श्याम सुंदर को बाढ़्यो अधिक अनंग॥४॥

लाल गुलाल की धूंधर में तब ले लिपटाये अंक। गुरुजन त्रास लाज सब कुलकी त्यागि भई निरसंक ॥५॥ सब अभिलाख भये सरि पूरण पूरी जियकी आस। गोपीवल्लीं ब्रजबनिता निज ग्रह लाय प्रेम की फांस ॥६॥

ग्रीष्म को पद

यथारुचि॥ मोज भरे दोउ होज किनारे बैठे करत प्रेम की बतियां। ग्रीष्म ऋतु लखि सखिन बनायो मंजु कुंज रचि दोह पन पतियां। सीतल पौन परसि जल करा मिलि सीतल भई सरस सीरनियाँ। हरीचन्द अलसाने दोऊ मुरि मुरि बिहंसि रहत लगि छतियां ॥१॥

धमार

राग धनाश्री॥ मन मोहन की बारि गोरी गूजरी॥ मगन भई हरि रूप में सब कुल की लाज बिसारि गौ॥१॥ नन्द सुवन को नाम ही कोऊ वाके आगे लेइ॥ सुन तहि तन थर थर कंपै मुख उत्तर कछू न देइ ॥२॥ श्याम सुंदर को चित्र ही जो कोउ देत दिखाई। नैनन सों अंसुवा बहे मुख बचन कह्यो नहिं जाई ॥३॥ जो कोऊ वासो पूछई मुख बोलत आनकी आन। जिय को भेदन खोलई वह नागरि चतुर सुजान ॥४॥ दृगको जल सूखे नहीं हो मनु यमुना बहि जाइ॥ गोरो मुख पीरो पर्‌यो मनु दिन में चन्द लखाइ॥५॥ नित गुरजन खीझत रहैं हो लरत ससुर अरु सास॥ तिनकी सब बातैं सहै नहिं छोड़े प्रेम की फांस ॥६॥ तन अति ही दुबरो भयो मनु फूल छरी की चाल। गोरो मुख नित नित घटै अरु सूखे अधर रसाल॥७॥ जो कोऊ कहि देइ हो मग मोहन निकसे आइ॥ सुनतहि उठि धावै अरी ग्रह काज सबै बिसराइ ॥८॥ मग में जो मोहन मिलै हो नहिं देखन भरि नैन॥ घूंघट पटकी ओट में हो करत कछू इक सैन॥९॥ जहो मन मोहन पग धरैं तहं की रज सीश चढ़ाइ। सखियन को संग छोड़िकै वह पाछे लागी जाइ॥१०॥ या ब्रजकी सब ग्वालिनी हो ज्यों ज्यों करत चवाव॥ त्यों त्यों वाके चित्त में हो बढ़त दोगुनो चाव॥११॥ जो बैठे

एकान्ता में हो जपत उनहिं को नाम ॥ ध्यान करै नन्दलाल को नहिं भावै कछु धन धाम ॥ १२ ॥ खान पान सब छोड़ि के हो पति को सुख बिसराइ । कोउ मिसि सों ब्रजराज के वह घर के मारग जाइ ॥ १३ ॥ बातन में वह राइ के हो पूछत उनकी बात । जो हमहूं कछु पूछिहीं तो बातन में फिरि जात ॥ १४ ॥ नैन नींद आवै नहीं वाके लगे स्याम सों नैन ॥ भावै नहीं कोऊ भोग सो बाने त्याग्यो सब सुख चैन ॥ १५ ॥ जो कोउ समुझावै ही तो औरहु व्याकुल होइ ॥ हरीचन्द हरि में मिली हो जल पै सम सब खोइ ॥ १६ ॥ स्फुट

रागयथारुचि ॥ मोहनलाल के रससानी । तनकी सुधि न भवन की सुधि कछु डोलत फिरत दिवानी ॥ उघरि कहत पिय गुन सबही में गावत कोकिल बानी । बिथुरी अलक सरकि रह्यो अंचल चंचल चखन लखानी ॥ पियरस मत छकी आसव सी पिय के रूप लुभानी ॥ पिय के ध्यान मूंदि रही लोचन अंतरगति प्रगटानी ॥ उझकि ललकि चौंकति भुज भरि भरि इमि सुख रहत भुलानी ॥ निजमन हंसत मौन ह्वै बैठति रो अति कहत कहानी ॥ हरीचन्द इक रस हरि के रंग दिन निसि जात नजानी ॥ प्रेम समुद्र तन नाव डुबोएहु प्रेम ध्वजा फहरानी ॥

विजयदसमी

मारू ॥ मान गढ़ लंक के विजय को मानिनी आज ब्रजराज रघुराज बनिके चढ़े भृकुटि धनु नैन शर विकट संधानि के मुकट की डाल करबाल अलकन कढ़े ॥ कोकिला कड़ाके उचरत कड़खात ही बदत बंदी बिरद भवंर आगे बढ़े ॥ कोक की कारिका बानरी सेन लै दास हरिचन्द रति विजय आनन्द मढ़े ॥

अशीश

कान्हरा ॥ माई तेरो चिरजीवो गोविन्द । दिन दिन बढ़ी तेज बल धन जन ज्यों दूइज को चन्द ॥ पालो गोकुल गोपी गोसुत गाय गोप सानन्द । हरो सकल भय निज भक्तन को नासो सब दुख दंद ॥ हरिचिर-

देखि गोद में अनुदिन रोहिनि यसुदानन्द। लगो बलाय प्रान प्यारे की मम वैननि हरिचन्द ॥१॥

बधाई

कान्हरा॥ यह निधि धर्म्महिं ते पाई। कीरति मैया तू बड़भागिनि जो तेरे घर आई। जाको ध्यान धरत सनकादिक शम्भु समाधि बढ़ाई। सो निधि तजि बैकुण्ठ धाम को बरसाने में आई। जाते ब्रज विहरत आनन्द भरि श्री गोकुल के राई। सो निधि बार बार उर धरिकै। हरीचन्द बलिजाई ॥१॥

रथयात्रा

सारंग॥ रथ चढ़ि नन्दलाल पीय करत हैं बन फेरा॥ आजु सखी लालन संग बिहरिवे की बेरा॥ रतन खचित सुन्दर रथ दिव्य बरन सोहे। छतरी ध्वज कलस चक्र सुर नर मन मोहे॥ छाई घन घटा चारु आनन्द बरसावैं॥ प्रमुदित घन श्याम तहां राग मलार गावैं। और कोऊ संग नाहिं हरि अरु ब्रज नारी। हांकत रथ आपने हाथ राधा सुकुमारी। कुंज कुंज केलि करत डोलत हरि राई॥ हरीचन्द युगुल रूप लखिकै बलि जाई ॥१॥

जाड़े में पौढ़िवे को पद

बिहाग॥ रजाई करत रजाई माहीं। राजा कृष्ण राधिका रानी दिये बाँह में बाहीं॥ सुखद सेज सुइ राज सिंहासन छत्र ओढ़ना सोहे। चँवर चिकुर डोलत चहुं दिसि तें कोत है जो नहिं मोहे। बजत निसान जीति जग को कंकन किंकिरि बहु भांती॥ झरत बादला मोती हीनी। सोइ दीनन मनि पाँती। बँधुवा मदनहिं बांधि मँगायो जे पाइन तर पेल्यो। कियो रिवराज सकल सुख संपति आनन्द सिंधु सकेल्यो। तब बंदीजन वेद स्वास कढ़ि पढ़यो बिरद अकुलाई। कियो स्वेद अभिषेक रीझ कच खचित कुसुम झर लाई। राज तिलक सिर दयो महावर अधर सुधा नमरानो॥ तिहि लहि सरवस दियो सरोपा साथ नील

सद वानो। नाची देसर वारि सुरवी तहं परमानन्द रह्यो छाई। हरीचन्द औसर तब लखिके प्रेम जगांरलिखाई ॥२॥

स्फुट

सबरी सेम की बलि जैं॥ महा पतित मो प्रीति तिहारी एक तुमहिं में पैये। नैमिनि जानिन दूरि राखिके हमहिं पास बैठये। हरीचन्द यह जग उलटी गति एक तुमहिं में पये॥२॥

रास

अथ धारुचि॥ राधिका नाथ के साथ ब्रज बाल सब नवल यमुना पुलिन रास रच्यो आज। लेत संगीत गत शब्द उघटत विविधि एक गावत राग सुरन सोच्यो आज। तत्त थेई तत्त थेई प्रगट धुनि होत तहं बजत किंकिन चुरी अनन्द माच्यो आज। थकित सुर गनन हरिचन्द निज तियन सह देखि जब मुदित नंद नन्द नाच्यो आज॥२॥

नित्य

तथा॥ राधिका पोढ़ी ऊंची अटारी। पूरनचन्द ज्यो नभ में लखि फैली बदन उजारी। दोऊ जोति मिलि एक भई है भूमि गगन लों भारी। सो छबि देखि सखी तृन तोरत हरीचन्द बलि हारी॥२॥

दिवारी

रच्यो यह तेरेहि हित त्योहार। दीप दिवारी जुगुति निकारी तोहित नन्द कुमार। तुम्र महलन की सुरति करन हित हठरी रुचिर बनाई। तुव मुख चन्द प्रकाश लखन हित दीपावली सुहाई। हाट लगाई तुव आवन हित और कछुन सन्देह। हरीचन्द बिहरे किन भुजभरि प्रीतम सों कारे नेह॥२॥

नित्य

बधाई॥ राधिका मंगल की नव बेलि जा दिन त प्रगटी बरसाने सब सुख धरयो सकेलि। नित नव आनंद नित नव मंगल नित नव नौतन केलि। हरीचन्द बिहरति प्रीतम सों कराट भुजा उर मेलि॥२॥

बधाई

रायजू आजु बधाई दीजे। तुम्हरे प्रगट भई श्रीराधा कछो हमारो कीजे॥ गोपिन को मनिगन आभूषण दै आशिख लीजे। ग्वालन पाग पिछौरी दीजे यातैं सब दुख छीजे। तुम्हरी सुता जगत ठकुरानी जायो सुख लखि लीजे। हरीचन्द वृषभान सुता के चरण कमल रस पीजे॥१॥

बधाई

रास रस व्रज में प्रगट भयो। फूली फिरत सबै ब्रज बनिता तन को ताप गयो। ली-ला रूप शील गुन सागर ब्रज आनन्द भयो। हरीचन्द ब्रजचन्द पिया को आनन्द अतिहि दयो॥१॥

बसन्त

चौताला॥ ऋतु बसन्त सुख करत आनन्द सब छितुरहंत॥ ब्रज में बिहरं-त जहाँ नन्दलालरी। चन्दन चोवा गुलाल मृग मद के बिंदु भाल बन्दन बुक्का रसा-ल करत ख्यालरी॥१॥ परसत कुच भागि जात आनँद उर नहिं समात धावत न-हिं पावत नन्दलाल बालरी॥ ओचक फिरि आय गहत मन में अति सुखहि लहत गारी मुख देत चलत चपल चालरी॥२॥ बाजत बीणा मृदंग आवज मुर चं-ग चंग बाँसुरी बजे संग संग देत तालरी॥ बाढ़्यो सुख अति अपार को कवि कहि-पावै पार गावत हरिचन्द तन्यो सुख को जालरी॥३॥

बिहार

बिहारा॥ रसिक गिरिधरन संग सेज सोई भली। रीझि पिय देत सुख दान की रति लली॥ध्रु०॥ डभकि झुक चूमि मुख लूटि रस अधर सुख मेटि जिय दुसह दुख करत नव रंग रली॥ भुजन सों भुज बँधे अंग प्रति अंग सधे कस मसक कुम्हि-लात सेज कुसुमन कली॥ अंग उमगे रंग पिया प्यारी संग प्रेम रति जंग मग मदन मद दल मली। सखी हरिचन्द रही रीझि तन मन वारि करत गुन गान रस मत चहुं दिशि अली॥१॥

तथा

तथा॥ रस बस में निशि जात न जानी। कहन सुनत कछु हंसत हँसावत दृग जो-रत छिन छबि बिहानी। आलस बिबस जम्हात परस्पर कहि बलिहार मधुर

सुर आनी। रूपलालची दृग नहिं झपकत जागत ही निशि सकल सिरानी। अरुझे प्रेम फन्द नहिं सुरझत सुख चूमत हरि राधा रानी॥ हरीचन्द सखि गन सोइ गावत युगुल प्रेम की अकथ कहानी॥

धमार

धनाश्री॥ लाल मेरो अचरा खोलेरी गुरुजन की नहिं मान लाल मेरो अचरा खोल्लेरी॥ ध्रु०॥ पनिया लेन हौं निकसी मोसों हंसि हंसि बोलेरी॥ १॥ मीठी-आठी बात सो प्यारो अमृत घोलेरी॥ २॥ हरीचन्द पिया सांवरो संग लागोइ डोलेरी॥ ३॥

नित्य

लालन पौढ़े हो बलिजाऊं॥ ध्रु० चांपी चरण कहानी भाखौं करि मनुहार सोवाऊं॥ १॥ सीत भीत परदा बहु डारौं नवल अंगीठी ल्याऊं॥ २॥ सरस रंग परि मल कोमल अति चारु रजाई उढ़ाऊं॥ ३॥ मधुरे गुन गाऊं प्यारे को करि मनुहार मनाऊं॥ ४॥ हरीचन्द पौढ़ो प्रिय लालन हौं तेरे बलि जाऊं॥ १॥

स्फुट

लाल यह तो तुरकन की चाल॥ ध्रु० दुख देनो गल्ले रति रेति कें करनो ताहि हलाल॥ जो वध करनो होइ बधो तो क्यों खेलत यह ख्याल॥ इक हाथ में काम बनैगो छूटैंगे भवजाल॥ कै मारो कै तारो मोहन कै मोहिं करो निहाल। हरीचन्द मति यों तर साओ बहुत भई नन्द लाल॥ १॥

रथ

सारंग॥ लाल नहिं नेको रथहि चलावे। गली सांकरी अटकि रह्यो रथ नहिं कहुं इत उत जावे॥ उत व्रषभान कुमारि अटापैं ठाढ़ी दृष्टि न टारे॥ इत नन्द लाल रसिक बर सुन्दर इक टक उतहि निहारे। ये हंसि हंसि के कमल फिरावत वे दोउ नैन नचावें। ये पीताम्बर लैचु उड़ावें वे मधुरे सुर गावें॥ रीझे रसिक परस्पर दोऊ हरीचन्द मनमाहीं॥ ये इत अपनो रथन चलावत वेन अटा सो जाहीं॥ १॥

स्फुट

यथारुचि॥ लाल लाल कर पद लाल अधर रस लाल लाल नैन तासों।

सांचे लाल भये हौ लाल माल बिन गुन लाल पीक छाप तन लाल लाल ही महावर सिर पै दये हौ ॥ पीरो पट छोड़ि लाल पट भलो ओढ़ि आप अनुराग प्रगट दिखावत नये हौ ॥ हरिचन्द अरुण शिखा धुनि सुनि चौंकि अरुन उहैस आज अरुन भय लाये हौ ॥ ९ ॥

रास

यथारुचि ॥ लखि सखि आजु राधिका रास ॥ यमुना पुलिन सरल कोमल कल जहं भक्ति का विकास ॥ उदित चन्द पूरन नभ मण्डल पूरन अन्तरिक्ष आस ॥ मद पूरन पिय धाम बने सजि निकर चिकुर भल पास ॥ प्रचलित पवन स्वन हित महं कत नेह मह दवन सुवास ॥ रवन मदद मद मंद गवन सुख भवन जहां हरि वास ॥ बजत मृदंग उपंग चंग मिलि भजन जति गति जास ॥ बढ्यो रंग रति रंग रंग लखि आग उमंग प्रकाश ॥ मुरली रली भली बाजन मिलि बीन लीन सुर स्वास ॥ ताल देत उत्ताल बजावत ताल तालकरि हास ॥ उघटत श्री राधे रधे मधुर ध्वनि वन सब आस ॥ हरि राधा की बदन रचन लखि बलि हारी हरि दास ॥

स्फुट

देश ॥ वेग आवो प्यारा बनवारी हमारी ओर ॥ ध्रु० ॥ दीन बचन सुनतो उठि धावो नेकुन करहु अबारी ॥ १ ॥ कृपा सिंधु छाड़्यो निठुराई अपनो विरद सम्हारी ॥ २ ॥ थांने जगदीन दयाल कहे क्यों म्हारी सुरत बिसारी ॥ ३ ॥ श्रागादान दीजो मोहि प्यारा हौं हूं दासी थारी ॥ ४ ॥ क्यों नहिं दीन बचन सुनो लालन कौन चूक छे म्हारी ॥ ५ ॥ तलफै प्राण रहैं नहिं तनमा विरह विथा बाढ़ी भारी ॥ ६ ॥ हरीचन्द गहि बांह उबारो तुमतो चतुर बिहारी ॥ ७ ॥

बिहार

वे देखो पौढ़ ऊंचे महल दोऊ झलकत रूप झरोखन आई ॥ ध्रु० ॥ हसनि मुरनि बतरानि परस पर कछुक दूरते परत लखाई ॥ फैली अंग प्रभा दीपक में जाल रंध्र सों झिरि झिरि आई ॥ हरीचन्द कंकन किंकिनि रव निसिके उछीर भरी मधुर कछु सुनाई ॥ १ ॥

रथयात्रा

वह देखो सखि सेत ध्वजा फहरान ॥ ज्यों ज्यों रथ नियरे आवत है त्यों त्यों मन

अकुलात ॥ खंजन से भरे नैन सखी के चकित इत उत डोलैं। आवत प्रान नाथ। रथ चढ़ि के सजनी यह मुख बोलैं। जहं लगि दृष्टि जात प्यारी की यह छवि होत रसालैं। मानहु आदर सों पिय के हित कमल पाँवड़े डोलैं। अति अनुराग संग बैठन को प्यारी मनकी जानी॥ हरीचन्द ले रथ बैठाये तिया अति हि सुख मानी॥१॥

पालना

वारी वारी हों तेरे मुखपैं वारी मैं तेरे लटकन पैं वारी॥ पलना झूलो हो हठ। छांड़ो बलि बलि गइ मह तारी। छोटी सी दुलहि नितेहि ब्याहैं अपने बाबा की दुलारी। तुम झूलो हों हरषि झुलावो हरीचन्द बलि हारी॥२॥

तथा

वारी मेरे लालन झूलो पलना॥ हौं बलि जाऊं बदन की मोहन मानहु बात हमारी। माखन लेहु ललन ब्रजजीवन वार नेगे महतारी॥ अचरा छोरहु तुमहिं झुलाऊं हरीचन्द बलिहारी॥१॥

स्फुट

यथा रुचि॥ सखी मेरे नैना भये चकोर॥ ध्रु०॥ अनुदिन निरखत श्याम चंद्रमा सुन्दर नन्द किशोर॥१॥ तनिक वियोग भये उरबाढ़त बहु बिधि नैन मरोर॥२॥ होत न पलकी ओट छिन कहूं रहत सदा दृग जोर॥३॥ कोउ नइन्हे छुड़ावन हारो अरुझे रूप झकोर॥४॥ हरीचन्द नित छुटे प्रेम रस जानत सांझन भोर॥५॥

गरमी को पद

सखी मोहिं ग्रीष्म अति सुख दाई॥ ध्रु०॥ जामें शोभा श्याम अंग की प्रतिछिन परत लखाई॥१॥ बिनु अंतर पट मिलत पियारो अंग अंग सों लाई॥२॥ हरीचन्द लखिवके सुख पावत गावत केलि बधाई॥३॥

धमार

देस॥ साडूला म्हारो भींजे न डारो रंग॥ ध्रु०॥ मति नाखो गुलाल आंखिन में सीखो छौं किन रो ढ़ ॥१॥ नाम लेइ म्हारो मति गावो गारी संग बजाइ के चंग॥२॥ हरीचन्द मद मात्या मोहन मतिला गोम्हारे संग॥३॥

फूलसिंगार॥ सखियन आज नवल दुलहिन को फूल सिंगार बनायो है।

फूलन के आभरन मनोहर रचि रचिके पहिरायो हो ॥२॥ फूलनि बेनी गुही मनोहर फूलन मौर सुहायो हो। फूलन के कँकना कर बाँधे फूलनि मराड मढ़ायो हो ॥ २॥ फूलनि चोली फूलनि सारी फूलनि लहँगा भायो हो॥ दुलहिन दुलहा गांठ जोरिके एक पास बैठायो हो ॥ ३॥ फूली फूली सब सखियन मिलि फूल्यो मंगल गायो हो ॥ फूली जोरी देखि नैन सों हरीचन्द सुख पायो हो ॥४॥

बहार

शोभा कैसी छाई कोइल कुहुँके भँवर गुंजारे सरस बहार फूलि रहीं सरसों अँखियन लगत सोहाई देखो। बीत बसन्त सिसिर ऋतु आई फिरि गदु काम दोहाई ॥ बौरन आम लगे मन बौरयो बिरहिन बिरह सताई देखो। जाने न देहों तोहि ऐसी समय में लेहों लाखबलाई ॥ हरीचन्द सुख चूमि पियरवा गरिवो रहि हों लगाई देखो ॥१॥

मकर संक्रान्ति

टोड़ी ॥ सुखद अति खिचरी को त्योहार। मिलि बैठे दोउ कुंज सखी री नीके नैन निहारि। पहिरि छींट बारो अति सुन्दर ओढ़े सुख दरजाई। सिसिर प्रवेश दिखावत गावत तान मान सुखदाई ॥ सखी सबै मिलि नेम पुजावत करत युगुल की सेवा॥ ताती खिचरी भोग लगावत भेट भरत बहु मेवा॥ करत दान तिल गोर श्याम दोउ हँसि हँसि पीतम प्यारी ॥ हरीचन्द जनि रीझि प्रान धन डारत छिनु छिनु वारी ॥१॥

टिपारे को पद

मल्लार ॥ सखी री ठाढ़े नन्द कुमार ॥ सुभग श्याम घन सुख रस बरसत चितवन सांझ अपार ॥ नटवर नवल टिपारो सिर पर लखि छबि लाजत मार ॥ हरीचन्द बलि बूँद निवारत जब बरसत धन धार ॥१॥

कार्तिक में सांझ को गाइवे को पद

यथारुचि ॥ सांच हि दीप सिखा सी प्यारी॥ धूम केस तन जग मगाति दुति दीपति भई दिवारी ॥ स्वयं प्रकाश अकुराद सुहाई बिनु आधार छबि छाई॥

सदा एक रस नित्य अधिक यह वासों चाल लखाई ॥ भरत सुगंधन ब्रज कुंज-न मग शीतल तन कर वारी ॥ प्रीतम तन को विरह मिटावत हरीचन्द दुख जा-री ॥ १ ॥

मल्लार

सखीरी मोरा बोलन लागे ॥ मनु पावस को टेरि बोलावत तासों अति अनुरा-गे । किधौं श्याम घन देखि देखि के नाचि रहे मुद पागे । हरीचन्द ब्रजचन्द पिया तुम आइ मिलो बड़भागे ॥ १ ॥

मल्लार

सखीरी कछु तो तपन बुझानी ॥ जबसों सीरी पवन चली है तबसों कछु मन मा-नी ॥ कछु ऋतु बदलि गई री आली मनु बरसे गो पानी ॥ हरीचन्द नभ दौरन ला-गे बरसा के अगवानी ॥ २ ॥

श्री गिरधरजी की बधाई

सदा तुम माया वाद निवास्यो ॥ जब जब प्रबल भयो मिथ्या मत तब तब प्रगट बिदास्यो ॥ प्रथम महि होय बिष्णु स्वामी प्रभु यह मारग विस्तास्यो ॥ फिरि श्री-वल्लभ है अगिन काढ कढ़ु माया मत छिन जास्यो ॥ अबके काशी लखि अ-सुरासी उधरन तासु बिचास्यो ॥ कृष्णावति ते श्री गोपाल ग्रह यदु कुल द्विज अवतास्यो ॥ नाक्ष जगत गुरु सुनत स्रवण पुट पावन अमृत पास्यो ॥ कियो ग्रं-थ बहु घर थिर थाप्यो मायावाद बिगास्यो ॥ श्री गिरधर गिरधर है प्रगटे पुष्ट-पंथ गिरि धास्यो ॥ प्रबल प्रवाह इन्द्र धारासों निज ब्रज लोग उबास्यो ॥ काशी में गोकुल करि दीन्हो श्रुति रहस्य उद्धास्यो ॥ हरीचन्द को जानि आपुनो करुना । करि निश्तास्यो ॥ १ ॥

असीस

यथारुचि ॥ सदा ब्रज सुबस बसो बरसानो ॥ जहो प्रगटी रसकी निधि राधे बाजत प्रगट निसानो ॥ युग युग अविचल राज रह्यो दोउ रावलि अरु नहरा-नो ॥ हरिचन्द के शीश रहो नित नील पीत को बानो ॥

धमार

काफी ॥ सुन्दर श्याम शिरोमनि प्यारो खेलत रस भरि होरी जू ॥ इत सब-सखा लसत रंग भीने उत वृषभान किशोरी जू ॥ नाचत गावत रंग बढ़ावत करत

बजावत तारीजू॥ हंसत हंसावत रंग बढ़ावत गावत मीठी गारी जू॥ श्रीराधा हंसि मोहन पकरे अपने बस करि लीनेजू॥ रंग मचाइ नचाइ गवायो मन भाये सुख कीने जू॥ कहत लाल छूटन नहिं पैहो बिनु फगुआ बहु दीने जू॥ मो बस परे भागि कित जैहो बादि चतुरई कीने जू॥ राधा जूके पाय पलोटो अरज करो करि जोरी जू॥ तब चाहे छोरिया तो छोरें नृप बृषभान किशोरी जू॥ हाहा खात लाल कर जोर करत बहुत मनुहारी जू॥ यह गति लखत देव गन व्याकुल ख्याल हंसत दे तारी जू॥ तीन लोक जाकी चरण छांह बल जियत बसत सुख पाई जू॥ ताकी गोपी जनके आगे चलत न कछु ठकुराई जू॥ शिव ब्रह्मा इन्द्रादिक जाको परसत चरण डराहीजू॥ ताको मुकुट उतारत गोपी तनिक संक जिय नाहीं जू॥ याहासी माया इकफेरे जग परबस है नाचे जू॥ ताहि नचावत पकरि गोपिका लखि जिय अचरज राचे जू॥ अस्तुति करत अधर सूखत है नेति कहत तऊ वेदा जू॥ गारी ताहि निशंख देत गोपी जन करत न खेदा जू॥ ध्यान धरत पूजत बहु भांतिन तदपि ध्यान नहिं आवे जू॥ ताहि गुलाल लगाइ हंसत सब करत जोई मन भावे जू॥ शिव समाधि अभ्र साधि करत नित तऊ झलक नहिं देखे जू॥ फेट पकरि तेहि जान देत नहिं ब्रज युवती सुख लेखे जू॥ जाको रूख चाहत त्रिभुवन में सुर मुनि नर भय पागे जू॥ हाथ जोरि सो अरज करत है राधा जूके आगे जू॥ वेद मंत्र पढ़ि साधि करम विधि यज्ञ करत जेहि लागी जू॥ ताको मुख माड़त केशर सों ब्रज युवती रस पागी जू॥ यह अद्भुत गति गति लखनै परत कछु देव विमानन भूले जू॥ मोहे फिरत सार नहिं जानत तऊ केलि सुख फूले जू॥ रमा पलोटत चरण सुरसती गुन गन गाइ सुनावे जू॥ ताके पद नूपुर दे गोपी निज सुख नाच नचावे जू॥ बरनौं कहा बरनि नहिं आवै को समुझै जो गावे जू॥ बल्लभ भवल हरिचन्द कछुक सों बल्लभ अनजर आवे जू॥ २॥

बिहार

बिहाग॥ सुन्दर सेजन दैठे पीतम प्यारी॥ झिलमिलात दीप ज्योति संग दोऊ सोवत ऊंची अटारी॥ रिझवत हिलि मिलि करि रस बातें

फैली बदन उजियारी ॥ दोपसों परस्पर मुख अवलोकन हरीचन्द बलिहा-री ॥ २ ॥

श्यामघटा

यथारुचि ॥ श्याम संग श्यामा रंग भरी राजत ॥ अरध ओट घूंघट पट कीन्हें लखि रति मन्मथ लाजत ॥ ध्रु॰ ॥ नील निचोल मध्य मुख ससिकी फैली घटा सोहाई ॥ झिलमिल जोति एक मिलि दीपति महलनि अति-छबि छाई ॥ १ ॥ श्यामहु बने श्याम रंग बागे अनुरागे पिय प्यारी ॥ हरीचन्द लखि युगुल माधुरी सरबस डान्यो वारी ॥ २ ॥

अष्टसखा

छप्पय ॥ श्रीदामा सुखदान कृष्णके परम प्राण प्रिय ॥ वसुदामा शुभनाम दाम मणि मय जाके हिय । सुबल प्रबल परिहास रसिक मंगल मधु मंगल । तोक सुखद ब्रज लोक कृष्ण अनुरूप कृष्ण कल । अर्जुन पालक गोवास बहु ऋषभ वृषभ यूथादि पति । हरिजूके आठ सखा सदा सुमिरत मंगल होत अति ॥ १ ॥

दीनता

श्री वल्लभ की सरि करै कौन ॥ प्रगटे प्रभु गुविन्द मन वाहक भक्त कारने जौन ॥ परम पतित तारन करुना मय रसनिधि बुधला भौन ॥ हरीचन्द जो-इनहि भजत नहिं महा अभागे तौन ॥ १ ॥

तथा

श्री वल्लभ प्रभु मेरे सरबस । पन्यो कृष्ण करि योग यज्ञ कोउ हमको तो इकइहे परम रस ॥ हमरे मात पिता पति बन्धू हरि गुरु मित्र धरम धन कुल यश ॥ हरीचन्द एकहि श्री वल्लभ तज सब धान भये इनके वश ॥ १ ॥

श्रीबड़े गिरिधरजीकोपद

श्री विट्ठल सुत गुणनिधान श्री रुक्मिणी जीवन प्रान बन्दे श्री गिरधर प्रभु षट गुन सम्पन्न धीर । अतिहीं रिझवार रसिक सकल कला गुन प्रवीन बन्धुन शिर छत्र छांह मेंटत जन पीर । सेवा रसपरस पात्र पण्डित जन मण्डित कर खंडित कृत माया मति छण्डित भवपीर श्री रानी प्रान नाथ गावत श्रुति

विशद गाथ हरीचन्द हाथ माथ धरत वल्लबीन ॥ १ ॥

श्रीरघुनाथ जीको पद

श्रीविट्ठल नन्दन जग वन्दन जैजै श्री रघुनाथ। जान किरमन शमन जनत्र धरात पितु पद रज गुनगाथ ॥ सेवा रोचक मोचक भवरुज कृत बल्लभी सनाथ। हरीचन्द अनुभव वियोग कृत सदा सहायक साथ ॥ १ ॥

श्री गोपी नाथ जीको पद

श्री बल्लभ सुत प्रथम प्रगट लीला रसभाव गुप्त जै जै श्री गोपी नाथ भक्तन सुखदाई। गावत गुन वेद चार तऊ नहिं पावे पार महिमा कोउ कहि न सकत गोप वंश राई ॥ पुष्टि पथ करन काज प्रगटे हैं भूमि आज गावत सब ब्रज-जन मिलि आनन्द बधाई ॥ हरीचन्द यश गावै बहुत बधाई पावे देखत त्रै-लोक सब बलि बलि जाई ॥ १ ॥ तथा

तथा ॥ श्रीबल्लभ गृह महामंगल भयो प्रगट भये श्री गोपी नाथ। मरयादा श्रुति रूप स्मरत हित संकर्षन जन कियो सनाथ। अक्षर ब्रह्म रूप शुभ सोहत अनुज धाम जग धाम स्वरूप योग ज्ञान कर्म्मादिक मारग थापन हित प्रगटे द्विज भूप। संवत् पंद्रह सौ शुभ सर सठ आस्विनि कृष्ण द्वादशी जानि। श्री महा लक्ष्मी जू के उदर ते प्रगटे हैं सब सुख की खानि। पुष्टि प्रवेश हेत अधिकारी करन कियो लीला विस्तार। कहि जैजै बल्लभ सुत दोऊ हरीचन्द जन भयो बलिहार ॥ २ ॥

श्री घनश्याम जी को पद

श्री विट्ठल घर अतिहि उछाह ॥ रानी पद्मावती सुत जायो पूरी अपने जनकी चाह ॥ आस्विनि वदी तेरस रविवासर बाढ्यो गोकुल प्रेम प्रवाह। हरीचन्द वैराग प्रगट गुन जै जैजै श्री कृष्ण वती नाह ॥ १ ॥

श्री गोविन्द राय जी को पद

श्री गुविन्द राय जयति सुन्दर सुखधाम ॥ देवि देव मेटि सकल कृष्ण रूप थापन नित सुन्दर वर रूप निज भक्तन अभिराम ॥ सुन्दर मरयाद रूप-

लोक रीति स्ववस नृप श्री भागवत थापन सुख मयसु श्राद्ध नाम ॥ हरिचन्द विट्ठल सुन भक्ति भाव भूरि संयुत राजभाव सेवन हरि सुजन पूरण काम ॥ १ ॥

श्री बाल कृष्ण जी को पद

श्री रुक्मिणि नन्दन जय जग बन्दन बाल कृष्ण सुख धाम ॥ सुन्दर रूप नैन रत नारे भक्तन पूरण काम ॥ रस वात्सल्य करन अनुभव नित विरह विघूनन हरि सुख नाम ॥ हरीचन्द विट्ठल सुखदायक प्रिय उन हरि रूप अभिराम ॥ १ ॥

श्री गोकुल नाथ जी को पद

श्री पक्ष अ निजमत राख लियो ॥ जीति सभा वादी कठोर बहु माला तिलक दियो ॥ अद्भुत अचरज बहुन दिखाये खल नृप निरखि भियो ॥ हरीचन्द मरयाद राखि निज जग जस प्रगट कियो ॥ १ ॥

श्री यदुनाथ जी को पद

श्री यदुपति जै जै महराज ॥ विरह गुप्त अनुभवत प्रगटि जग महं विराग को साज ॥ निवसत रह लघु कहन सुनत लहु छांड़ि जगत के काज ॥ हरीचन्द परमारथ पूरन गोविंद भक्ति जहाज ॥ १ ॥

सिंदूरा

धमार ॥ हमें लखि आवत क्यों कतराये ॥ साफ कहत क्यों न जिय की चलन जो छांह सो छांह मिलाये ॥ होरी में का बरजोरी कीजो गे क्यों इतने इतराये ॥ रूप गरब फागुन मद माते ताहू पें अति रसिकाये ॥ जो तुम चाहत सो नइने कछु चलो रही न लगाये ॥ हरिचन्द तुमरे देव हारन बुरा है ते फल पाये ॥ १ ॥

बधाई

आसावरी ॥ सुनत जनम वृषभानु लली को उठि धाईं ब्रज नारी हो ॥ मंगल साज लिये कर कंचन पहिरे रंग रंग सारी हो ॥ जो जैसे तैसे उठि धाईं सुनतहि स्वामिनि नामा हो ॥ भादों नदी सरस उमगाईं चहुं दिशि ब्रज की वामा हो ॥ बेनी शिथिल खसित कच भुमुसन लुलित पीठि पर सोहै ॥ काजर नैन अप्रवरन ज नर वन देखत ही मन मोहै ॥ भुम भुम मंडित मुख शशि शोभित .

बेंदी हीर जराई ॥ अधर तमोल रंग सों भीने गावत सरस बधाई ॥ आनन्द उमगे गात गात सब हिय अति अधिक उछाह ॥ सबघर पुत्र भयो धन बाढ़्यो सबही के मनु व्याहा ॥ लोचन तृषित दरस बिनु ब्याकुल पगहू सोंबढ़ि धावैं ॥ चौंकि चौंकि चितवत चारहु दिशि मग मनु कंज बिछावैं ॥ आइ जुरीं बृषभानु भौन में मुख निरखत सुख पायो ॥ पदपरि तरवा चूमि निरख दृग जन्म सुफल करवायो ॥ धनि दिन धनि छिनधन पलधनि यह घरी सोहाई ॥ जामें तीनि लोक की स्वामिनि भानु भवनि प्रगटाई ॥ नाचत गावत करत कुलाहल प्रेम उमंगि अकुलानी हो ॥ हसत प्रमोद करत मन फूलत बोलत कोकिलबानी ॥ अति रस मत्त बदत नहिं काहू उछलित रस आवेसा ॥ अंचल खुलत नाहिं सुधि तनकी भई एकही भेसा ॥ सब ब्रजको सिंगार रूपरस भाग सुहाग सुहायो ॥ मोहन की सरबस संपति संग मिलि बरसाने आये ॥ को कहि सके कहाकहि भेषे कबिपै नहिं कहि जाई ॥ जोसुख शोभा ताछन बाढ़ी अनुभव नैन लखाई ॥ नन्द भवन ते बढ़ि सुख तेहि छन क्यों प्रगटायो हो ॥ हरीचन्द बल्लभ पद बलतें केवल यह लखि पायो हो ॥ १ ॥

मल्लार

हमारे तन पावस बास कस्यो ॥ ध्रु० ॥ बरसत नैन वारि सब ही छिन दुख घन उमड़ि परयो ॥ युगुन चमकि अंगार बिरह की स्वासा बानु भस्यो ॥ हरीचन्द छिय कबी मिलि नातरु गात जस्यो ॥ १ ॥

जलविहार

हमें तुम देहो का उतराई ॥ पार उतार देहि जो तुम को करिके बहुत रेखवाई ॥ जोबन धन बहु हैं तुमरे ढिग सो हम लेहिं छोड़ाई । हम तुम्हरे बस हैं मनमोहन जो चाहो सो करो कन्हाई ॥ निरजन थनगे नाव लगाई करी केलि मनभाई । हरीचन्द प्रभु गोपी नायक जगजीवन ब्रज राई ॥ १ ॥

तीजको पद

हमारे भाई स्यामा जूकी जोति ॥ हारी सदा जहाँ पिय प्यारो यहै प्रीति की रीति । प्रेम होड़ में बहु नायक बनि खोई श्याम प्रतीति ॥ यदपि निरन्तर लखत रहत न-

लखतऊ नाम की भीति। होत अधीन भौंह फेरन में यहे यहाँ की रीति। हरिचन्द याही सों सबसों सरस युगुल की भीति॥ ४॥

बधाई॥ हम जो मनावत सो दिन आयो। कीरति सुता प्रगट बरसाने आयो गीत बधायो। करि सिंगार बलोधर घर लें मंगल साज सजायो। हाथनि कंचन थार बिराजै चौमुख दीप जगायो॥ भाई मिलि वृषभान गोप के अति आनन्द उरआयो॥ आपे दीने कलस धराये टीको सबन लगायो॥ गावत गोपी तन मन अर्पो द्वार निशान बजायो॥ हरीचन्द तेहि समय माइ के बहुत बधाई पायो॥ ॥

होरी के पूजन को पद

आजु हरि खेलत सखनि संग ब्रजभान किशोरी॥ पूना निशि डहडह उजियारी बांह बांह में जोरी॥ १॥ चांदनि में गुलाल की चमकनि अरु बुक्कन की भोरी॥ यमुनातीर सेत बारू मधि अति शोभित भइ होरी॥ २॥ इत सब सखा खेल बौराने उत मद माती गोरी॥ अद्भुत छवि हरिचन्द देखि के रह्यो हरषितृरा तोरी-

सांझी को पद

आजु दोउ खेलत सांझी सांझ॥ नन्द किशोरी राधा गोरी जोरी सखियन मांझ॥ १॥ कुसुम जुनन में रुनझुन बाजत कर चूरी पग झांझ॥ हरीचन्द विधि गरब गरूरी भई रूप लखि बांझ॥ २॥

होली

रेखता॥ बचे रहो जरा यह बदनामी फाग है॥ आंखो की भी हमसे तुमसे-लाग है॥ इस ब्रज का तो सभी चवाई लोग है॥ आंख लगाना यहाँ बड़ा एक भोग है॥ मेरी तुमरी प्रीति बहुत मशहूर है॥ तिस्से भी होरी रंग चकनाचूर है॥ लगी आंख भी छुटी आज तक है कभी॥ करो लाख तदबीर यहाँ क्यों नहिं सभी। उतरे जी के साथ यह अजब खुमार हैं॥ हरीचन्द बचना इससे दस बार है॥

समधिन

मधुमात॥ होरी में समधिन आई॥ अहो फागुन त्योहार मनाई॥ यथा शक्ति कीन्हो सबही ने समधिन को उपचार॥ समधिन जूने बहुत करायो॥

आदर शिष्टाचार ॥ १ ॥ समधिन की तो चुपरी चमरी चोटी सों धोलाय । समधि-
न को लखि रपटि परत है समधी को मन धाय ॥ २ ॥ समधिन की तो अतिहि चीं-
कनी फिसिल फिसिलि सब जात । देह विया रंग भीनि रहै जहाँ भविशत सबै
बरात ॥ ३ ॥ सबै जुड़ावत समधिन को लखि बुक्का रंग सुख भीजि ॥ तब सम-
धिन की चुम्बन लगत हे सारी रंग सों भीजि ॥ ४ ॥ छाती मीडत सब समधिन
की रूप छटा छवि देखि । डारत अतर लगाइ अरगजा रंगीली समधिन पेखि ।
५ ॥ समधिन जू लगवावत डोलत सबसों चोआ रंग ॥ फटी दरार परी समधिन
की चोली उमिर उमंग । ६ ॥ समधिन जू बिय सी ज्ञरतत तुम इतो नवन नहिं योग ॥
मानत तुम्हरी नृपहूं सो बढ़ि धाप सबै ब्रज लोग ॥ ७ ॥ फैलि रही चहुं दिशि सम-
धिन की कीरति की नव बेलि ॥ तुमहिं देखि सब करत रंग सों होरी रस क खिरे-
लि ॥ ८ ॥ ढाढ़ो होत तुमहिं देखत ही आदर हित दरबार । गाँव भरे की नारि तुम-
हिं इक आदर देत अपार ॥ ९ ॥ इहि विधि समधिन रंग बढ़ल ब्रज कौन सकै सो-
गाय ॥ नित दूलह नित दुलहिनि पै जन हरीचन्द बलि जाइ ॥ १० ॥

बिहार

राग यथारुचि ॥ पिया मुख चूमत अलकन टारि ॥ सोई बाल सुरी पल-
कन की छबि रहे लाल निहारि ॥ १ ॥ कबहुं अधर हरये कर परसत रहत भवँर
निह आरि ॥ अञ्जन मिसी सिंदूर निरखि रहे टरटन इक पल टारि । २ जागी
भरि आलस दोऊ भुज श्री नम के गलडारी ॥ २ ॥ खींचि चूमि मुख पास सोवा-
यो हरीचन्द बलिहारि । ३ ॥ महरानी तिहारो घर सुफल फलो ॥ सुनवी कीरति
तें कन्या जनि सब ब्रज जन को कियो भलो ॥ १ ॥ कोऊ गावत कोउ हंसत मोद-
भरि कोऊ अति आनन्द रलो ॥ देखि चन्द मुख कुंवरि लली को वारि फेरि तन-
मन सकलो ॥ २ ॥ आनंद मगन सबै ब्रजवासी सब जिय को दुख पगनि दलो ॥
हरीचन्द युग युग चिरजीओ युगुल कहानी सुगुल चलो ॥ ३ ॥

दीनता

यथारुचि ॥ हमारे निरधन की धन राधा ॥ साधत कोटि छोड़ि इनही को चरण

कमल अवराधा ॥१॥ कुल के बल हम गिनत न काहू करत न जिय कोऊ साधा ॥ ह-
रीचन्द इन नख प्रति मेरी हरी निमिर अबबाधा ॥२॥

धनाश्री

चौताला ॥ महा कुंज सुजन में मिलि के बिहार कीने तहां बैठि आसन समा-
धि समुझावें जिनि । जौन अंग लाग्यो पिया अंगन में बार बार तौन धूर धूर कों सांझ
बतलावै जिनि ॥ हरीचन्द जाही वय नित ही विलोके श्याम ताहि मूदि योग को
अयोग ध्यान लावै जिनि ॥ जाही कान सुनी प्यारे हरि की मधुर बातें हाहा ऊधो ता-
ही कान अलख सुनावै जिनि ॥१॥ स्फुट

राग यथारुचि ॥ मनकी कासों पीर सुनाऊं ॥ बकनो वृथा और पत खोनी सबै
चवाई गाऊं ॥१॥ कठिन दरद कोऊ नहिं हरि है धरि है उलटो नाऊं । यह तो जो
जाने सोइ जाने क्यों करि प्रगट जनाऊं ॥२॥ रोम रोम प्रति नयन श्रवण मन के-
हि धुनि रूप लखाऊं ॥ बिना सुजान शिरोमणि री केहि हियरो काढ़ि दिखा-
ऊं ॥३॥ मरमिन सखिन वियोग दुखिन क्यों कहि निज दशा रोआऊं ॥ हरीचन्द पि-
य मिले तो पग गहि बाट रोकि समुझाऊं ॥४॥

तथा ॥ तू केहि चितवत चकित मृगी सी । केहि ढूंढ़त तेरो कहा खोयो क्यों अ-
कुलाति लखाति ठगी सी ॥१॥ तन सुधि करि उघरत री आंचर कौन ख्याल तू
रहति खगी सी ॥ उतरु देत न खरी जकी ज्यों मद पीये के रैन जगी सी ॥२॥ चौंकि
चौंकि चितवति चारिहु दिशि सपने पिय देखति उमगी सी ॥ भूलि बैखरी मृग सा-
वक ज्यों निज दल तजि कहुं दूरि भगी सी ॥३॥ करति न लाज हाट घरन की कुल-
मरयादा जाति डगी सी ॥ हरीचन्द ऐसे हि उरझी तो क्यों नडोलत संग लगी-
सी ॥४॥

श्री महाप्रभु जी की बधाई

आजु ब्रज सांची बजत बधाई ॥ रति पथ प्रगट करन को द्विज वपु बल्लभ प्रगटे
आई ॥१॥ दैवीजन हित कारन भूतल लीला फेरि दिखाई ॥ हरीचन्द भूले ल-
खि निज जन लियो बांह गहि धाई ॥२॥

तथा ॥ आजु प्रेम पथ प्रगट भयो भुव जन में श्री बल्लभ पूरण काम ॥ कठिन

काल कलि देखि दयाकरि आपुहि चलि आये द्विजधाम ॥१॥ वहे जात अपने जन लखिके धस्यो बाँह गहि कहि हरिनाम ॥ हरीचन्द रस मय वपु सुन्दर एकतराधा सुन्दर श्याम ॥२॥

तथा

निजपथ प्रगट करनकों द्विज हे आपुहि प्रगट भये हरि आज ॥ माधव कृष्ण इकादशि गुरुदिन लछमन भटग्रह पूरण काज ॥१॥ दैवी जन मन अति हुलसाने फूल्यो ब्रज को सकल समाज ॥ हरीचन्द मिलि नाचत गावत मिले भक्तजन तजि जगलाज ॥२॥

तथा

आजु ब्रज घर घर बजत बधाई ॥ द्विजवपु ले नन्दनन्दन प्रगटे लछिमन भटघर आई ॥१॥ फिर वँहे लीला सोई रस निज जन हेत दिखाई ॥ हरीचन्द से अधम जानि निज तारे भुज गहि धाई ॥२॥

होली

यौवन कैसे छिपाऊँ री रसिया परो पाछे ॥ झलकत तन दुरि सारी सो काढ़ि लगत तमासे गाऊँरी ॥१॥ मुख ससि चमक नील घूँघट में ज्यों त्यों सकुचि चुराऊंरी ॥ येडक सों हे अंचल बाहर इनकह कहा दुराऊं री ॥२॥ बजमारे विधि क्यों सिर अये कहा करूं कित जाऊँरी ॥ हरीचन्द गोकुल में बसिके पतिव्रत कैसें निभाऊंरी ॥३॥ यहि विधि सिरजे नाहिं री तेरे जोवन दोऊ । रहे दुरे कित ये सिसु तामें जो अब प्रगट दिखाहिरी ॥१॥ उमगे परत हरत मन हरि को कंचुकि मैं न समाहिरी ॥ हरिचन्द निधि मदन धरी निज इनहिं संपुटनि माहिरी ॥२॥

मान के पद

यथारुचि ॥ नेकु निहारु नागरी हौं बलि ॥ इती रुखाई प्रान पिया में मानत करु सखि मानरी उठि चलि ॥१॥ फूलत लप बिरचत तउ प्यारो बिरह हुतासन जात चले गलि ॥ तूइत बैठी भौंह तने नत नहिं सोहात मोहि यह रूखो कलि ॥ खसित निशा नायक पश्चिम दिशि आधी सो बढ़ि रैन चली ढलि ॥ अरुन शिखा धुनि सुनियत कहुँ कहुँ सीरी पवन चली सुगंध रलि ॥ बलि किन कुञ्ज भवन तू भामिनि अपनी सौतिन कों छलबल छलि ॥ प्रथम

मान पुनि सहजहि मिलि वो सुनि बैरिनि रहि जैहैं जलि जलि ॥ कसि-
कञ्चुकि नैनन दै काजर नूपुर छोड़ि अतर अंगन मलि । बिन बिलम्ब
उठि मिलु प्यारेसों बिरह दवागि मिलेष्णम जल ढलि । भाग भरी अनु
रागभरी सखिपीतम सरस सोहाग फलन फलि । हरीचन्द सखिसाथ-
गवनछबि नैनन ते नहिं जाइ कबहु टलि ॥ ७ ॥

मल्लार

बरसा में कोउ मान करत है तू कित होत सखीरी अयानी ॥ यह ऋतुपीत-
म गर लागन की तू रूसत कित होइ सयानी ॥ देखुन कैसी हुई अंधि-
यारी बरसि रह्यो रिमि झिम लखु पानी ॥ हरीचन्द चलि मिलु पीतम
सों लूटिन रति निधि पिय मन मानी ॥ १ ॥

मलार

भीजत सांवरे संग गोरी ॥ अरस परस बातन रस भूली बांह बांह में जोरी ॥
कदम तरे ठाढ़े दोउ ताने एकहि अरुन पिछौरी ॥ चुअत रंग अंग बस
न लपटि रहे भीजिभीजि दुहु ओरी ॥ जलकन श्रवत संग बगी अल
कन करत युगुल चित चोरी ॥ गावत हंसत रिझावत मिलि मिलि पुनि-
पुनि भरत अंकोरी ॥ बरसत घेरि घेरि घन उमगे चपला चमकत जोरी ॥
बोलत मोर कोकिला तरुपल पवन चलत झकझोरी ॥ अति रसरह-
स बढ्यो बृन्दावन हरित भूमि तरुखोरी ॥ हरीचन्द छबि टरट न दृगत्ते
निरखि भीजती जोरी ॥ १८ ॥

मल्लार

हमारी प्यारी सखियन की सिरताज ॥ भोरीगोरी पियरसबोरी लाज सुहा-
ग जहाज ॥ ब्रज रानी कीरति सुत दानी पूदनि यसुमति काज ॥ नन्द ब-
बाकी नैन पूतरी मोहन की सुख साज ॥ भानु रायके घरकी दीपक पाल-
नि भक्त समाज ॥ हरीचन्द पिय सहित करौनित अविचल ब्रजमें राज ॥ २ ॥

इति

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
तथा मोट अक्षरों की स-	अनेकार्थ	पद्मावती खंड	रामलीला व रासलीला
येतसवीर व क्षेपक	छंदोर्णव पिंगल	शुकबहत्तरी	दोहावली व रत्नावली
रामायण तुलसी कृत	कविकुल कल्पतरु	बकावली गुल	गोकर्ण माहात्म्य
सातों काण्ड	रसराज	बहारदानेश	श्री गोपाल सहस्रनाम
१ बालकाण्ड	सतसई मूल तथा स-	क़िस्सा हातमताई	कथा सत्यनारायण स-
२ अयोध्याकाण्ड	सभाविलास	अपूर्व कथा	हनुमान बाहुक
३ आरण्यकाण्ड	तुलसी शब्दार्थ	क़िस्सा गुल सनोबर	जनक पच्चीसी
४ किष्किन्धाकाण्ड	भजनावली	सहस्र रजनी चरित्र	आनंदामृतवर्षिणी
५ सुन्दरकाण्ड	प्रेमरत्न	राबिन्सन का इतिहास	ब्रजयात्रा
६ लंकाकाण्ड	युगलविलास	**वैद्यक**	कायस्थ वर्ण निर्णय
७ उत्तरकाण्ड	चित्रचन्द्रिका	निघण्टु भाषा	बिहार वृंदावन
रामायण शब्दार्थ की	बारहमासा व छंद-रु-	अमरविनोद	समर बिहार वृंदावन
रामायण का इतिहास	मनोहर लहरी	वैद्यजीवन	कल्प भाष्य
रामायण मानस दीपिका	गंगालहरी	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली	**दरसी**
रामायण कवितावली	यमुनालहरी	अमृतसागर बड़ा व छोटा	अक्षरावली
रामायण गीतावली	जगद्विनोद	वैद्यमनोत्सव	स्वयम्बोध
रामायण गीतावली स-	**राग**	**ज्योतिष**	ज्ञान चालीसी
विनयपत्रिका बा- मा-	रागप्रकाश	जातकचंद्रिका	दोहावली
विनयपत्रिका बा- टि-	लावनी	जातकालंकार	बालाबोध
वेदान्त	श्रृंगार बत्तीसी	दैवज्ञाभरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
योगवाशिष्ठ	क़िस्सा वग़ैरह	ज्ञान स्वरोदय	किताब जंत्री
प्रबोध चंद्रोदय नाटक	नानार्थ नाम संग्रहावली	रमलसार	गणित कामधेनु
काव्य	चमत्कार	इंद्रजाल	लीलावती
सूरसागर	शिवसिंह सरोज	**मुतफ़र्रक़ात**	पटवारियों की पुस्तक आ-
सुधासागर	भक्तमाल	धानिश्वर की कथा	सर्रिश्ते तालीम की
विश्रामसागर	रामाभिषेक नाटक	ज्ञानमाला	**पुस्तकें**
प्रेमसागर	इंद्रसभा	गोपीचंद भरतरी	**संस्कृत**
ब्रजविलास बड़ा व छोटा	विक्रमविलास	कथा श्री गंगाजी	ऋजुपाठ १ भा- २ व ३ भा-
कविप्रिया	बैतालपच्चीसी	अवधयात्रा	धात्वर्णव
विजयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	भरतरी रीति	सारस्वत व कौमुदी

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वर्णमाला कैथी १भा० २	पद्यसंग्रह	रजिस्टर हाज़िरी मदरसाला	ऐक्ट चौपायोंका
तथा कैथी फ़ारसी नागरी	भाषाकाव्यसंग्रह	क़ानून	मदाखलत बेजा
हरूफ़ मुफ़र्रात	कवित्तरत्नाकर १भा०	पटवारियों के क़ायदे	१ सन् १८७१ ई०
अक्षरारम्भ	२भाग	उर्दू कैथी महाजनी	ऐक्ट मजमूआ ज़ा-
वर्णप्रकाशिका १भा० २भा०	मंगलकोष	टिकट के लाइसन्स का	बता फौजदारी १०
सूरजपुर की कहानी	अंकप्रकाश	ऐक्ट २ सन् १८७८ ई०	सन् १८७२ ई०
धर्म्मसिंह का वृत्तांत	गणितप्रकाश १भा०	नागरी	ऐक्ट मालगुज़ारी
शिक्षावली	तथा २भाग ३ व ४	ऐक्ट लगान मग़रबी	मग़रबी व शिमा-
शिशुबोध	गणितक्रिया	व शिमाली १० सन्	ली १९ सन् १८७३
पत्रहितैषिणी	क्षेत्रप्रकाश	१८५९ ई०	ई०
पत्रदीपिका	क्षेत्रचंद्रिका २भाग	इंडियन पिनल	तरमीम मजमूआ
विद्याचक्र	सकील दायरा	कोर्ट मजमूआ ज़ाबि	ज़ाबिता फौजदा-
विद्यांकुर	रेखागणित १भा० व २	ता फौज़दारी ऐक्ट	री १२ सन् १८७४
पदार्थविद्यासार	बीजगणित १भा० व २	२५ सन् १८६१ ई०	ई०
पदार्थज्ञानविटप	रामायण तुलसीकृत	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्	तक़ावी के क़ायदे
भोजप्रबंधसार	बालकाण्ड	१८६२ ई०	सवाल जवाब
राजनीति	अयोध्याकाण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २०	पुलिस
भाषा लघुव्याकरण	(आरण्यकाण्ड	सन् १८६६ ई०	अवध रुहेलखं-
१ भाग तथा २	किष्किंधाकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत	ड रेलवे का दस्तू-
भाषातत्त्वदीपिका	सुन्दरकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई०	रुल अमल
भाषा चन्द्रोदय	लंकाकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अ-	
भूगोलतत्त्व	उत्तरकाण्ड	वध लगान १९ सन्	इति
भूगोलदर्पण	गुटका १भा० व २ व ३	१८६८ ई० पुरम्ना	जो पुस्तक छप रही
इतिहासतिमिरनाशक	हिदायतनामा मुदर्रि-	दारी २६ सन् १८६९	हैं उनके नाम नीचे
१भा० २ व ३ भाग	सान्	ई० वग़ैरा	लिखे हैं
अवधदेशीय भूगोल	पशुचिकित्सा	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-	आनंद रघुनंदन
इंग्लिस्तान का इतिहास	पट्टा व ख़त कैथी	वेज़ात १८६९ ई०	नाटक
भारतवर्षीय इतिहास	तथा क़बूलियत	ऐक्ट ताल्लुक़दारा-	हरिहर सगुणानि-
हितापत्रिका	रजिस्टर दाखिल ख़ा-	न मक़रूज़ अवध	गुणपद्यावली
बालाभूषण	रिज तुल्बा मदर्सा	२४ सन् १८७० ई०	